द्वितीय अध्याय

हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान

द्वितीय अध्याय

हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान

(क) हिन्दी कहानी साहित्य में अमरकान्त का स्थान

अमरकान्त के लेखन की शुरुआत 'नयी कहानी से होती है। वे नयी कहानी आंदोलन के प्रमुख कर्णधारों में से एक हैं। नई कहानी आंदोलन के पीछे जो तत्व प्रेरक शक्ति के रूप में काम कर रहे थे उसके मूल में मोहभंग, हताशा, कुंठा, देश का बँटवारा, सांप्रदायिक दंगे, संयुक्त परिवारों का तेजी से हो रहा विघटन, पारिवारिक संबंधों पर अर्थ का दबाव, प्रेम संबंधों की समस्या, अमीरी–गरीबी के बीच लंबी होती खाई, नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच सामंजस्य की समस्या, बेरोजगारी, महानगरीयता, अकेलापन, शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वावलंबी स्त्रियों की नई विचारधारा, कामकाजी स्त्रियों का दोहरा शोषण, जातिगत व्यवस्था में उपेक्षा का भाव और ऐसी ही अनेकों बातों का समावेश था।

आजादी के पहले पूरे राष्ट्र के सामने एक ही सपना था। वह सपना था अखंड स्वतंत्र भारत राष्ट्र का। अपना देश और अपनी चुनी हुई सरकार का। सबके लिए रोटी, कपड़ा, मकान और सम्मान का। अपने जीवन को अपने तरीके से जीने का सपना भारतवासियों ने देखा। 15 अगस्त सन् 1947 को यह राष्ट्र स्वतंत्र भी हुआ। सरकार बनी, नेहरू जी स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री बने। पंचवर्षीय योजनाएँ शुरू की गयी। शिक्षा के क्षेत्र में काम शुरू हुआ। देश की प्रगति को अधिक से अधिक गति प्रदान करने के लिए आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और तकनीक का उपयोग प्रारंभ किया गया। सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। लेकिन इन सब के बीच ही आजादी के मात्र 10–15 सालों के भीतर ही यह बात कही जाने लगी कि 15 अगस्त 1947 को

भारत स्वतंत्र नहीं हुआ, अपितु उस दिन जो कुछ भी हुआ वह मात्र 'सत्ता का हस्तांतरण' था। उसे किसी भी तरीके से स्वतंत्रता नहीं कहा जा सकता। फिर इस आजादी ने बँटवारें का जो विभत्स रूप दिखाया था, उससे देशवासियों की रूह तक काँप गयी थी।

आजादी के बाद देश की राजनैतिक स्थितियों ने आम आदमी को यह विश्वास दिला दिया कि यह वह आजादी नहीं है जिसका सपना उन्होंने देखा था। अवसरवादिता, भाई–भतीजावाद, परिवारवाद और लालफीताशाही ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। आम आदमी के हालात में कोई सुधार नहीं हुआ। उसकी सुध लेने वाला अब भी काई नहीं था। सारी सुख–सुविधाएँ कुछ गिने–चुने पूँजीपतियों के हाँथ में ही थी। आदर्श, नैतिकता, त्याग, बलिदान, राष्ट्रसेवा, समानता, रोजगार और बराबरी के अवसर जैसी बातें होती तो थी लेकिन इनकी आड़ में सब अपना स्वार्थ सिद्ध करते दिखायी पड़ रहे थे। इन सारी परिस्थितियों में गरीब जनता अपने आप को ठगी हुई महसूस कर रही थी।

देश की स्वतंत्रता के साथ देखे गये सभी आदर्शवादी सपने यथार्थ की जमीन पर दम तोड़ने लगे थे। प्रांतवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद और नेताओं की अवसरवादिता ने आम आदमी के मन को घोर निराशा व अवसाद से भर दिया था। साथ ही साथ एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हमपर अपनी एक शाख बनाने का भी दबाव पड़ ही रहा था। सुदूर ग्रामीण अंचलों से निकलकर युवक शहरों में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वे देश में हो रहे परिवर्तनों को समझ रहे थे।

इस सभी स्थितियों के बीच अमरकान्त समाज के मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग को केन्द्र में रखते हुए अपना लेखन कार्य शुरू करते हैं। सपाट कथानक, सरल भाषा और यथार्थ चित्रण को वे अपना हथियार बनाते हैं। जिस परिवेश में रहे उसकी भाषा,

संस्कृति और समस्या को ही अपने लेखन का विषय बनाया। कल्पना, प्रयोग करने के लिए प्रयोग, कामुक स्थितियों एवम् भावों का अनावश्यक विस्तार के साथ चित्रण, प्रेम के काल्पनिक त्रिकोण और उनका असहज लगनेवाला अंत, भावुकता के साथ आदर्श की स्थापना का अव्यवहारिक प्रयास, इन तमाम बातों से बचते हुए अमरकान्त ने विश्वसनीय लगने वाले कथा साहित्य को लिखा। आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आकर कथा साहित्य के भारतीय स्वरूप को बिगाड़ने में उनकी जरा भी दिलचस्पी नहीं रही।

अमरकान्त का लेखन कार्य आजीवन जारी रहा है। 80 की उम्र पार कर चुके अमरकान्त 'ओस्टिओमेलाइटिस'' नामक बीमारी से ग्रस्त थे। इसके बावजूद भी वह लेखन कार्य करते रहे। उन्हें ऐसी बीमारी थी जिसमें हिलने–डुलने मात्र से भी मरीज के शरीर की हड्डियों के टूटने का खतरा रहता था। गंभीर आर्थिक संकट से जूझते हुए, शरीर की बीमारियों से लड़ते हुए भी एक सच्चे साधक की तरह उन्होंने अपने साहित्य साधना का कार्य जारी रखा था। ऐसे में हिंदी कथा साहित्य को उन्होंने जो दिया उस प्रदेय की चर्चा हम इस अध्याय के माध्यम से करेंगे।

1) मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण–

अमरकान्त के कथा लेखन के दायरे में समाज का जो वर्ग सबसे अधिक चित्रित हुआ है, वह है निम्नमध्यमवर्ग और मध्यवर्ग। इस समाज को जितनी गहराई और विस्तार के साथ अमरकान्त ने चित्रित किया, उतना उनके समकालीनों में किसी अन्य कथाकार ने शायद ही किया हो। ऐसे में अक्सर एक सवाल उठता है कि आखिर अमरकान्त मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग को ही मुख्य रूप से अपने कथा साहित्य का विषय बनाकर अपने आप का वहीं तक सीमित क्यों करते हैं?

इसका कारण उन सभी परिस्थितियों के बीच है, जिन्होंने 'नयी कहानी' के स्वरूप को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उभारने में मदद की। साथ ही साथ अमरकान्त का अपना व्यक्तित्व, उनका अपना परिवेश, जीवन को देखने की उनकी अपनी दृष्टि, ये सारी बातें ही महत्वपूर्ण हैं। अमरकान्त अन्याय, शोषण और निर्धनता के बीच पिस रहे मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग के लिए बहुत कुछ करना चाह रहे थे। लेकिन उनकी अपनी सीमाएँ थी। लेकिन उन्होंने अपनी लेखनी को ही हथियार बनाया और तय किया कि वे समाज के निम्नमध्यवर्ग और मध्यवर्ग के अधिकरों की लड़ाई इसी कलम से करेंगे। अमरकान्त अपने आत्मकथ्य में अपने ही संदर्भ में लिखते भी हैं कि, ''उसमें शारीरिक, मानसिक एवम् आर्थिक क्षमताएँ बहुत नहीं थीं। अमरकान्त एक संकल्प के साथ अपना लेखन कार्य शुरू करते हैं जिसमें देश की साधारण जनता को अन्याय, शोषण और निर्धनता से मुक्त कराने की बात प्रमुख थी।''[11]

शायद इसी कारण अमरकान्त के यहाँ कल्पना, भावुकता, आदर्श, प्रेम, सेक्स, आधुनिकता और शिल्पगत प्रयोगों जैसी बातों के विस्तार के लिए अधिक गुंजाइश नहीं रही। उनके यहाँ विस्तार के साथ कुछ चित्रित हो सकता था तो वह था साधारण व्यक्ति का यथार्थ, उसके सपने, उसका संघर्ष, उसकी मानसिकता, उसका मोहभंग, उसकी नियती, उसका गाँव–देहात, उसका कस्बा, उसका शहर, उसके संघर्ष का परिवार पर प्रभाव और प्रतिकूल सामाजिक व्यवस्था में उसका हो रहा शोषण। ''अमरकान्त ने अपनी रचनाओं के लिए वही भूमि चुनी जिसमें वे जी रहे थे। यही उनके जैनुइन होने का रहस्य है।''[12]

इस तरह हम देखते हैं कि अमरकान्त यह अच्छी तरह जानते और समझते थे

---

[11] लाल, डॉ. लक्ष्मी नारायण. (1996). हिंदी कहानियों की शिल्प विधि का विकास. पृ. 234–235

[12] टंडन, डॉ. प्रताप नारायण. (1970). हिंदी कहानी कला. लखनऊ : हिंदी समिति सूचना विभाग

कि उन्हें क्या करना है। ऐसा साहित्य जिसका उद्देश्य ''सामाजिक वास्तविकताओं से विमुख करना, आत्मगत सत्यों' को प्रक्षेपित करना, यथार्थ द्रोही भाषा का निर्माण करना. शिल्पगत चमत्कार उत्पन्न करना तथा झूठी आधुनिकता का बहाना मात्र हो तो ऐसा साहित्य प्रयोजनहीन हो जाता है।'' ऐसे प्रयोजनहीन साहित्य से अमरकान्त ने अपनी दूरी लगातार बनाये रखी। अमरकान्त ने जो कथा साहित्य रचा उसमें गरीबी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, शोषण आदि के खिलाफ पूरी ईमानदारी के साथ लड़ने का संकल्प था। अमरकान्त देश की साधारण जनता की आवाज बनना चाहते थे। और अमरकान्त ने यही किया भी। मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग की जीवन में निहित तमाम जटिलताओं को उन्होने अपने कथा साहित्य का विषय बनाया। इस वर्ग के जीवनानुभव और इसकी जिजीविषा के सूक्ष्म से सूक्ष्म स्वरूप को भी चित्रित करने में अमरकान्त सफल रहे हैं। उसकी आशा, निराशा, पीड़ा, घुटन, संत्रास, शोषण, आकांक्षा, बेरोजगारी, कुंठाएँ, टुच्चापन, आलस और अब सब कुछ अमरकान्त के साहित्य का केंन्द्र बिंदु रहा है। यहाँ तक की उसकी तर्कहीन मनुःस्थिति भी।

इतना ही नहीं अपितु मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग के बीच के अंतर को भी अमरकान्त अच्छी तरह समझते रहे। यह अंतर इन वर्ग विशेष के पात्रों के आचरण के आधार पर आसानी से समझा जा सकता है। मध्यवर्ग के पात्र प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपनी झूठी शान, प्रतिष्ठा, इज्जत आदि को बचाने के लिए लगातार प्रयत्न करते हुए दिखायी पड़ते हैं, जबकि निम्न मध्यवर्गीय पात्रों के साथ यह बात नहीं दिखायी पड़ती। रजुआ, मूस, परबतिया और मुनरी कुछ ऐसे ही निम्नमध्यवर्गीय पात्र हैं।

समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि अमरकान्त ने अपने लेखन द्वारा साधारण जनता की लड़ाई में खुद को भी शामिल करने का संकल्प लिया था। यह लड़ाई थी शोषण, कुंठा, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, लालफीताशाही और आर्थिक अथाव के खिलाफ।

इसलिए समाज के मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग का ही चित्रण उन्होंने बड़े ही विस्तार और ईमानदारी के साथ किया।

2) आम आदमी का मोहभंग –

नयी कहानी आंदोलन के पीछे जो प्रेरक शक्तियाँ थी, उनमें से एक प्रमुख स्वर मोहभंग का भी थी। देश की जनता को जब यह आभास हो गया कि अब देश स्वतंत्र होने वाला है तो, उन्होंने इस स्वतंत्रता को लेकर कई सपने सजों लिये। इस संभावित आजादी ने आम आदमी के भीतर एक जोश भर दिया। उसने बहुत सारी अपेक्षाओं के ताने–बाने के बीच अपने सपनों को बुनना शुरू कर दिया। आम आदमी की इन्हीं आशाओं की एक झलक अमरकान्त के उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' में देखी जा सकती है। विभिन्न समस्याओं पर आजादी के साथ जो सपने सँजोये गये उन्हें निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है।

1) सुविधाओं की समस्या पर डॉक्टर बनवारी की माँ से कहता है कि, ''....हम एक गुलाम देश हैं, विदेशियों ने हमारे देश को काफी चूसा है। चारों ओर भयंकर गरीबी है, अस्पताल, डॉक्टर वगैरह बहुत कम हैं। यह सोचकर सन्तोष कीजिए कि जब देश आजाद हो जाएगा तो गरीबी दूर होगी और लोगों की तन्दुरूस्ती का भी ख्याल रखा जाएगा।''[13]

2) उपन्यास का पात्र रमाशंकर, चाची को समझाते हुए कहता है कि, ''जब देश आजाद हो जायेगा तो गरीबी दूर होगी, लोगों का दवा इलाज होगा, गरीब ऊँचा उठेंगे, घी–दूध की नदियाँ बहेंगी ....इसीलिए तो गाँधाजी और लाखों लोग जेल जाते हैं, लाठी

[13] अमरकांत. (2013). मित्र–मिलन. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, पहला खंड. पृ. 289

–डंडा सहते हैं, अपने सीने पर गोली रोकते हैं और अपनी जान कुर्बान कर देते हैं।''[14]

3) उपन्यास का पात्र निलेश, आनंदी से कहता है कि, ''अम्मा, आज गाँधीजी देश की आजादी के लिए बड़ी लड़ाई चला रहे हैं, आजादी के लिए लोग लाठी–गोली की मार झेल रहे हैं, खुशी–खुशी जेल जा रहे हैं। इस लड़ाई में सबसे अधिक तो ऐसे गरीब लोग हैं जो मुश्किल से दो जून का खाना जुटा पाते हैं। और भी कष्ट झेलना पड़ सकता है, मगर आजादी मिलने पर सबका कष्ट दूर भी हो जाएगा।''[15]

इसी तरह के कई अन्य उदाहरण इस उपन्यास में खोजे जा सकते हैं। इन सभी संवादों में आजादी के बाद के सुनहरे सपने का स्वरूप दिखलायी पड़ता है। लेकिन आजादी के बाद मात्र 10–15 सालों के अंदर ही आम जनता का सपना टूट गया। 'बँटवारे' के साथ मिली आजादी में अफसरशाही और अवसरवादिता हावी हो गयी। रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या आम आदमी के लिए उसी तरह बनी रही, जैसी वह आजादी के पहले थी। बड़े बड़े उद्योगपतियों और धनी लोगों के लिए सारी सुख–सुविधा थी, लेकिन आम आदमी की सुध लेनेवाला काई नहीं था। आम आदमी अपने आप को ठगा हुआ महसूस कर रहा था। उसके अंदर हताशा और कुंठा बढ़ती जा रही थी। उसका शोषण उसी तरह चल रहा था, जैसे की पहले अंग्रेजों द्वारा होता था।

आम आदमी की इसी त्रासदी को 'नयी कहानी' ने स्वर दिया। देश का बँटवारा, पुरानी परंपराओं और रूढ़ियों के प्रति विद्रोह, बेरोजगारी, अराजकता, कुंठा, मोहभंग, आर्थिक दबाव, अर्थ का संबंधों पर पड़ रहा प्रभाव, गाँव और शहर के बीच

---

[14] अमरकांत. (2013). बीबी के खत. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, दूसरा खंड. पृ. 499–500

[15] अमरकांत. (2013). मित्र–मिलन. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ, पहला खंड. पृ. 289

बढ़ती दूरी, टूटते संयुक्त परिवार, प्रेम, प्रेम के त्रिकोण, जीवन में बढ़ता अकेलापन, आदि बातों को नयी कहानी आंदोलन के कथाकारों ने अपने कथा साहित्य का विषय बनाया।

अमरकान्त ने भी आम आदमी के इस मोहभंग को समझा। उसकी त्रासदी, उसके संघर्ष को अपना संघर्ष बनाते हुए उन्होंने ऐसे कथानक सामने लाये जिनमें – आम आदमी का दर्द खुलकर सामने आ गया। 'डिप्टी–कलक्टरी' कहानी के शकलदीप बाबू की आशा–निराशा आजादी के बाद के मोहभंग को प्रमुखता से दिखलाती है। 'कला प्रेमी' कहानी के सुबोध की बातों में भी इसी मोहभंग की स्थिति दिखायी पड़ती है। वह कहता है, ''सारे संसार को रास्ता दिखाने वाले इस देश में कोई परिवर्तन क्यों नहीं होता है? शासन कर रहा है? बड़ी–बड़ी जातियों के सामन्तवादी प्रवत्तियों वाले लोग। आज भी इन्हीं जातियों का शासन है। .....आप जहाँ जाइए, ये लोग अपने स्वार्थो के लिए झट दो दल बनाकर आपस में लड़ना शुरू कर देते हैं। लड़ाई जितनी तेज होती है, उतनी ही ऊँची–ऊँची बातें की जाती हैं। इनमें से प्रत्येक अपने को एकमात्र देशभक्त घोषित करता है – एकमात्र क्रांतिकारी। इनमें से प्रत्येक शोषणहीन समाज की स्थापना करने का दावा करता है। जबकि चाहिए इनको कुर्सी, सत्ता और सुख–सुविधा। वर्षो से वही लोग, वही बातें, वही आदतें, वही काम–और कभी एक गुट सत्ता में आता है और कभी दूसरा गुट....।''[16]

इस तरह समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि अमरकान्त ने नयी कहानी आंदोलन क मुख्य स्वर 'आम आदमी के मोहभंग' को न केवल अच्छी तरह समझा अपितु उसे पूरी ईमानदारी के साथ अपने कथा साहित्य में चित्रित भी करते हैं।

---

[16] टंडन, डॉ. प्रताप नारायण. (1970). हिंदी कहानी कला. लखनऊ : हिंदी समिति सूचना विभाग

(क) प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी

आधुनिक युग में साहित्य की जिस विधा को अत्यंत लोकप्रियता मिली वह है कहानी। कहानी को साहित्य की विधाओं यथा उपन्यास, निबंध, संस्मरण, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, गीत, गद्यगीत, खंडकाव्य आदि की अपेक्षा प्रमुखता भी मिलती रही है। कहानी को अनेक विद्वानों ने परिभाषा में आबद्ध करने की कोशिश की, परंतु वे असफल ही रहे। उनकी ये परिभाषाएँ कहानी की कुछ विशेषताओं को ही उभार सकीं।

आधुनिक युग में जिन रचनाओं का अवतरण 'कहानी' की संज्ञा से हुआ है संस्कृत में इसे 'आख्यायिका', बंगला में 'गल्प' और अंग्रेजी में शॉर्ट स्टोरी' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। पाश्चात्य कवि–आलोचक–कथाकार एडगर एलिन पो का वर्तमान कहानियों पर सर्वाधिक प्रभाव देखा जाता है। वे आधुनिक कहानी के जन्मदाताओं में भी प्रमुख माने गये हैं।

एलेरी के अनुसार –''कहानी घुड़दौड़ के समान होती है। जिस प्रकार घुड़दौड़ का आदि और अंत महत्वपूर्ण होता है उसी प्रकार कहानी का आदि और अंत का ही विशेष महत्त्व होता है।''[17] एलेरी ने इस परिभाषा द्वारा कहानी की सक्रियता पर ज्यादा महत्त्व दिया है। हडसन ने कहानी में मूलभाव को महत्त्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार–''लघु कहानी में केवल एक ही मूल भाव होता है।''[18]

डॉ.नामवर सिंह कहानी को समय की कला मानते है। उनके अनुसार–''समय के साथ कहानी अनेक प्रकार की कलाएँ दिखाती है, कभी वर्षों को समेट कर एक क्षण में

---

[17] एलेरी सिंह : 'हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली', 2008, पृष्ठ–163

[18] एलेरी सिंह : 'हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली', 2008, पृष्ठ–163

बाँध देती है। कभी क्षण को खोलकर वर्षों में फैला देती है, कभी समय के दायरे को तोड़ती है तो कभी टुकड़ों को जोड़कर एक दायरा बनाती है।''[19]

हिंदी कहानी को सर्वश्रेष्ठ रूप देने वाले प्रेमचंद ने कहानी की परिभाषा इस प्रकार दी है–''कहानी वह ध्रुपद की तान है जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने के बाद भी नहीं हो सकता।''[20]

कहानी पर विचार करते हुए प्रेमचंद यह भी कहते हैं–'' कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभावों को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।..... वह एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप में दृष्टिगोचर होता है।''[21]

डॉ. भगीरथ मिश्र ने अपनी पुस्तक 'काव्य शास्त्र' में कहानी की जो विशेषताएँ बतायी है, वह इस प्रकार है–

- कहानी जीवन की एक झलक मात्र प्रस्तुत करती है।
- कहानीकार के लिए संक्षिप्तता और संकेतात्मकता आवश्यक है।
- कहानीकार एक भाव या प्रभाव विशेष का चित्रण करता है।
- कहानी में प्रासंगिक कथांशों का अवसर नहीं होता।
- कहानी में थोड़े समय में ही महत्त्वपूर्ण बात कहनी होती है। अतः कला की सूक्ष्मता

---

[19] डॉ. नामवर सिंह : 'आधुनिक हिंदी कहानी, (भूमिका) 2019

[20] अवधिया जी. के. द्वारा 26 नवंबर 2010

[21] चौधरी सत्यदेव और गुप्त शांतिस्वरूपः 'भारतीय और पाश्चात्य काव्य शास्त्र, पृ 249

इसमें आवश्यकता इसमें आवश्यक होती है। कहानी कलात्मक अधिक होती है। वह एक भाव विशेष का ही चित्रण करने का प्रयत्न करती है।

- कहानी द्वारा हल्का मनोरंजन भी प्रायः संपादित हो पाता है।''[22]

उपर्युक्त कहानी के लक्षणों या विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए कहानी को हम निम्न प्रकार से परिभाषित कर सकते हैं– कहानी गद्य का वह रूप है जो छोटे अंश में लिखा जाता है, जिसमें मानवीय जीवन के वास्तविक घटनाओं के किसी एक अंश को अपनी अनुभूति के आधार पर पूर्ण रूप से, प्रभावशाली ढंग से, तीव्रता के साथ चित्रित किया जाता है।

विद्वानों की इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि किसी विद्वान ने मूल तत्त्व को, किसी ने आदि और अंत को, किसी ने आकार को, किसी ने सहज गति और प्रेषणीयता को तो किसी ने जीवन के किसी एक अंग के चित्रण को प्रमुखता देते हुए कहानी को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। इसमें से किसी की भी परिभाषा कहानी को संपूर्ण रूप से परिभाषित नहीं कर पायी है। इसलिए पाश्चात्य विद्वान सीन.ओ. फाउलियन की यह उक्ति उचित जान पड़ती है–''अच्छी कहानी के गुण परिभाषा में नहीं बाँधे जा सकते।''[23]

स्पष्ट है कि कहानी का संबंध मानवीय जीवन से है। किसी न किसी रूप में कहानी जीवन की हर एक पहलु से जुड़ी होती है। इसका विषय विस्तार बहुत व्यापक है। कहानी के स्वरूप को किसी सीमा या परिभाषा में बाँधना सरल नहीं है। इसके स्वरूप में विविधता है। ''कहानी ने युग और अवसर के अनुरूप महाकाव्य, खंडकाव्य,

---

[22] चौधरी सत्यदेव और गुप्त शांतिस्वरूपः 'भारतीय और पाश्चात्य काव्य शास्त्र, पृ 289

[23] सीन.ओ., फाउलियन : 'काव्य– शास्त्र', 2014, पृष्ठ–82

कथा, आख्यायिका, उपन्यास, गल्प, नाटक आदि के रूप में ग्रहण किये हैं। इसी कारण जब हम कहानी के स्वरूप का विश्लेषण करते हैं, तो इसके अवयवों में इसके सभी तत्व को पा जाते हैं और यही एक बड़ा कारण है कि आजकल मानव–समाज साहित्य के नाते कहानी पर ही जा रहा है।''[24] और आधुनिक युग में कहानी–साहित्य रोचकता, कला, विविध शैलियों व विषय की व्यापकता के कारण अत्यधिक उभर रही है।

मानव–जाति के जन्म के साथ ही कहानी का भी जन्म हुआ है और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया है। इसी कारण प्रत्येक सभ्य और असभ्य समाज में कहानियाँ पाई जाती रही है। कहानी कहने और सुनने की परंपरा मानव सभ्यता के आदिकाल से ही किसी न किसी रूप में रही है। इस संबंध में ई.ए. फॉस्टर का कहना है–''कहानी मानव की आदिम व्यवस्था से संबद्ध है। यह तब उत्पन्न हुई थी जब मनुष्य ने पढ़ना भी नहीं सीखा था, साहित्य के मूल रूप उत्पन्न हो रहे थे। इसीलिए कहानी हमारी आदिम प्रवृत्तियों को अपील करती है।''[25]

अतः सभ्यता के आदि काल से ही मानव जीवन का कथा साहित्य लिखित रूप में न सही परंतु मौखिक रूप में जन–मानस में प्रचलित अवश्य रही है। प्राचीन भारतीय भाषा संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि में तो कहानी का लिखित रूप भी उपलब्ध है। भारत में ही कथा साहित्य की लिखित रूप की संपन्न एवं विषयों की विविधता देखने को मिलती है।

''लघु आकार की कहानियों से लेकर बृहदाकार कहानियों तक, पशु–पक्षियों, परियों–भूतप्रेतों की कहानियों से लेकर मनुष्य के जीवन का यथार्थ चित्रण करने वाली

---

[24] सीन.ओ., फाउलियन : 'काव्य– शास्त्र', 2014, पृष्ठ–82

[25] हिंदी कहानी : परंपरा और प्रगति', 2019, पृष्ठ–18

कहानियों तक की जो परंपरा हमारे साहित्य में मिलती है वह अप्रतिम है। कहानियों की मौखिक परंपरा का लेखा–जोखा दुस्साहस कार्य है। कहानियों की लिखित परंपरा भारतवर्ष में वैदिक काल से ही मिलती है। उपनिषदों की रूपक परंपरा, महाभारत के उपाख्यानों,रामायण की कहानियों, बौद्धों की जातक कथाओं और फिर पौराणिक देवी–देवताओं के चतुर्दिक बुनी गई रोचक कथाओं का अपूर्व भंडार हमारे यहाँ विद्यमान है। बाद में इसी कथा परंपरा का विकास 'वासवदत्ता', 'कादंबरी', 'दशकुमारचरित' आदि की लंबी कहानियों और 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'बेतालपच्चीसी', 'सिंहासन बत्तीसी', शुकसप्तिति', 'कथा सरितसागर' और 'भोजप्रबंध' आदि की छोटी–छोटी कहानियों में हुआ।''[26] हिंदी कहानी की परंपरा में हम इन कथाओं को शामिल कर लेते हैं, ''लेकिन ये सब हिंदी की अपनी विशिष्ट कहानी परंपरा न होकर संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंशों से प्राप्त समस्त भारतीय कहानी की परंपरा है और उस पर मराठी, गुजराती, बंगला या अन्य भारतीय भाषाओं का उतना ही अधिकार है जितना हिंदी का। परंपरा के रूप में हिंदी कहानी को सही सामूहिक और समग्र कथा दृष्टि मिली है।''[27]

जिस आदि विद्या कहानी का प्रारंभ लोक कथाओं से हुआ है वह मनुष्य का अनुभव, विचार और कल्पना शक्ति के फलस्वरूप है, जिसे वे अपनी समस्त आंतरिक अनुभव व कल्पना तथा बाह्य शक्तियों को भाषा के द्वारा व्यक्त करता है। ''कभी अनदेखे अनजाने भूत और भविष्य को समझना चाहने वाला मनुष्य जीवन के मूलभूत संघर्षों से घिरा हुआ, हर क्षण विरोधी परिस्थितियों से डूबा, आज यहाँ कल वहाँ की घटनात्मक गति में अपने सीमित बोध से जितना जान लेता है, वही उसका ज्ञान है। जिसे नहीं जान पाता उन सबको भूत–प्रेत, देवी मान लेता है, तब हिंदी की आधुनिक

---

[26] हिंदी कहानी : परंपरा और प्रगति', पृष्ठ–18

[27] श्रीवास्तव गरिमा :'हिंदी कहानी : परंपरा और परिवेश', 2019, पृष्ठ–6

कहानी का सूत्रपात होता है।''[28] ''इसी समय प्रकृति के छः देवता मानकर अपने से ऊँचा प्रतिष्ठित करता जाता है। सूर्य, चंद्र, वर्षा, सागर, जीवन–मृत्यु उसके समझ से परे है। वह उसे देवता मान लेता है। ये देवता और आधी भौतिक शक्तियाँ उसकी अपनी जिंदगी में घुली–मिली है। कभी कोई साहसी इन देवताओं की शक्ति को ललकार देता है। हार जाता है तो देवता की प्रतिष्ठा और बढ़ जाती है, जीत जाता है तो हीरा बन जाता है। उसकी हार और जीत रोज एक नई कहानी को जन्म देती है।''[29]

जैसे–जैसे मनुष्य बुद्धिमान, अनुभवी होने लगे, धीरे–धीरे प्रकृति के साथ समझौता भी होने लगा। जिस जंगली पशु से डर कर मनुष्य उनकी पूजा करते थे, जिस प्रकृति की शक्ति से वे बचने का उपाय खोजते थे वही अब उनकी कहानियों में मित्र के रूप में उपदेश देते हुए, नीति की बातें बताते हुए दिखाए जाने लगे। इससे पहले की कहानियों में जहाँ भय का भाव मिलता था वही अब विश्वास, संयम आदि का भाव प्रकट होने लगा। इस स्तर की कहानियों में मनुष्य जीवन के आपसी संबंध को व्यक्त किया जाने लगा। त्याग, बलिदान, प्यार, विजय–पराजय, छल–कपट आदि को लेकर कहानियाँ लिखी जानी लगी। और फिर मनुष्य धोखे–छल–कपट, लोभ आदि से आत्मरक्षा और बचने का उपाय ढूँढने लगा। इस स्तर में आकर केवल भाव और विचारों में परिवर्तन देखने को नहीं मिलता बल्कि शैली और दृष्टांत में भी सुंदरता और कलापूर्ण परिवर्तन देखने को मिलता है।

इसके पश्चात रामायण, महाभारत आदि पुराण कथाओं को लेकर मिथकीय कहानियाँ लिखी जाने लगी जिसमें धर्म–कर्म पर जोर देते हुए प्रतिष्ठा की बातें,

---

[28] श्रीवास्तव गरिमा :'हिंदी कहानी : परंपरा और परिवेश', 2019, पृष्ठ–6

[29] श्रीवास्तव गरिमा :'हिंदी कहानी : परंपरा और परिवेश', 2019, पृष्ठ–7

नीति–आदर्श की बातें, मर्यादाओं के बनने–बिगड़ने, जुड़ने–टूटने की बातें, सत्य का असत्य पर जीत, राज्य–संघर्ष, जय–पराजय आदि की बातें कहानियों के माध्यम से चित्रित होने लगी। इसके अतिरिक्त राज्य–विस्तार, विश्व–विजय, युद्ध–संघर्ष आदि कहानियों का विषय होने लगा। इसी पुराण कथाओं के फलस्वरूप आगे चलकर विकसित, प्रतिष्ठित, उन्नत समाज कहानियों के रूप में हमारे सामने आती हैं। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' में पुरूरवा–उर्वशी, यम–यमी आदि की कथा मिलती है। इसीलिए छठी शती में ईरान के शाह खुसरो नौशेरवाँ ने संस्कृत भाषा में रचित पंचतंत्र का पहलवी भाषा में अनुवाद करवाया। इसी पंचतंत्र का अनुवाद ईसाई पादरी बुद्ध ने भी सीरियन भाषा में किया। यही नहीं संस्कृत में रचित अन्य कहानियों का भी अरबी, लैटिन, स्पेनिश, ग्रीक, जर्मन, अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं में अनुवाद कार्य हुआ है। इसके अतिरिक्त भारतीय कथा–साहित्य के अन्य ग्रंथों का भी पाश्चात्य देशों में प्रचार प्रसार हुआ। मध्य युग में भी फारसी के वासनात्मक प्रेम से युक्त कई कहानियाँ लिखी गई। अतः स्पष्ट है कि कथा–साहित्य का उद्‌भव भारत में ही सर्वप्रथम हुआ। इसी के प्रभाव स्वरूप विश्व के अन्य देशों में कथा–साहित्य का विकास हुआ है।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ से हिंदी साहित्य की शुरूआत मानी जाती है। जातक कथा, गोराबादल की कथा, बृहद् कथा, चौरासी वैष्णवन की कथा, लल्लू लाल कृत 'प्रेमसागर' सदल मिश्र कृत 'सुख सागर' आदि से हिंदी का प्रारंभिक रूप माना जाता है। हिंदी भाषा में लिखित होने पर भी कहानी कला के तत्वों के अभाव के कारण इन कहानियों को हिंदी कहानी–साहित्य में स्थान नहीं दिया गया।

आधुनिक काल से पूर्व अधिकतर हिंदी कहानी पद्य में लिखे गये। धीरे–धीरे गद्य में लिखने की परंपरा चली। सबसे पहले 'कहानी' नामक कहानी गद्य रूप में सामने आयी। इसके पीछे पश्चिम के एडगर एलेन पो के कथात्मक गद्य रूप का महत्त्वपूर्ण

हाथ माना जाता है। ''इसमें कोई संदेह नहीं हिंदी साहित्य में कहानी विधा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में कहानी का उद्देश्य भले ही उपदेश देना और मनोरंजन करना रहा हो, लेकिन आज मानव जीवन की विविध समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना इसका उद्देश्य बन गया है। प्राचीन कथा से आधुनिक हिंदी कहानी आत्मा और शैली दोनों ही दृष्टि से बिल्कुल भिन्न हो गयी है।

प्राचीन कहानियों का क्षेत्र सीमित होने के कारण पशु–पक्षियों को भी पात्रों के रूप में शामिल किया जाता था। राजा–रानी, सेठ–सेठानी आदि उच्चवर्ग के जीवन की घटनाओं का काल्पनिक चित्रण अधिक होता था। पात्रों के चरित्र का विश्लेषण और चरित्र में कृत्रिम विकास प्रस्तुत नहीं किया जाता था और न ही देश के वातावरण का ही चित्रण होता था। अलौकिकता, अस्वाभाविकता, आदर्शवादिता और काल्पनिकता को अधिक प्रधानता दी जाती थी। स्वर्गलोक की कल्पना थी। वहीं आधुनिक कहानियों में मनुष्य वर्ग के चित्रण का रूप उभरने लगा। आधुनिक कहानियों में जन–साधारण के जीवन की परिस्थितियों का यथार्थ अंकन के साथ–साथ पात्रों के चरित्रों व उनके चरित्र में कृत्रिम विकास का भी अंकन होता है। इनमें लौकिकता, स्वाभाविकता, यथार्थवादिता और विचारात्मकता पर अधिक बल दिया जाता है जो हमें मानव के सुख–दुःख में उनके साथ जुड़ने का स्मरण भी कराती है। इसी संदर्भ में भगीरथ मिश्र ने लिखा है–''प्राचीन कहानी और आज की कहानी में उसी तरह का भेद है जैसा राजतंत्र और स्वतंत्र शासन में । आदिम कहानी विशेष एवं प्रसिद्ध व्यक्तित्व को लेकर चली थी, पर आज की कहानी का नायक साधारण और उपेक्षित जन है। प्रारंभ में कहानी कही जाने वाली वस्तु थी, लिखी–पढ़ी जाने वाली वस्तु नहीं, जैसा कि 'कहानी' नाम से विदित है। पर यह अंतर होते हुए भी जब हम कहानी के मुख्य तत्व को खोजते हैं, तो कही जाने वाली कहानियों में वह उतनी सबलता से विद्यमान है कि

जितना वर्तमान लिखित कहानियों में।''[30]

2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी कहानी

हिंदी कहानी की शुरूआत मूलतः 20वीं शताब्दी से मानी जाती है। पिछले पचास–साठ सालों में हिंदी कहानी का विकास जितनी तीव्रता से हुआ उतना अन्य साहित्यिक विधा में परिलक्षित नहीं होता है। कहानी युग के अनुरूप स्वयं को ढालकर विभिन्न मोड़ों को पार कर आज इस बिंदु पर पहुँची है जिसमें समस्त मानवीय जीवन की धड़कन को सुना जा सकता है जो अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में गद्य के विकास को आधुनिक काल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना माना है। इस गद्य के विकास के साथ ही कहानी जैसी महत्त्वपूर्ण विधा का भी आरंभ होता है जो उपन्यास से भी अधिक लोकप्रिय साहित्य का स्थान ग्रहण करती है।

हेरनी, मोपांसा और चेखव में सबसे अंतिम कथाकार चेखव थे जिनकी मृत्यु सन् 1904 में हुई और इसी समय भारत में प्रथम कहानी भी लिखी गई।

नई चेतना के प्रचार प्रसार से गद्य के विकास का गहरा संबंध हैं। देश में नई शिक्षा का आरंभ जब हुआ तो इसका सबसे पहले असर बंगाल में हुआ। नई चेतना का विकास बंगाल में होने के कारण हिंदी गद्य के आरंभिक विकास पर बंग्ला के विकास के प्रभाव की बात कही जाती है। आचार्य शुक्ल के अनुसार–''अंग्रेजी की मासिक पत्रिकाओं में जैसे छोटी–छोटी आख्यायिकाएँ या कहानियाँ निकला करती हैं वैसी कहानियों की रचना 'गल्प' नाम से बंग भाषा में चल पड़ी थी।''[31] इससे स्पष्ट है कि

---

[30] मिश्र भगीरथ : 'काव्य–शास्त्र', रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रकाशन वर्ष 1976, पृष्ठ–88–89

[31] आचार्य रामचंद्र शुक्ल : 'हिंदी साहित्य का इतिहास', प्रयाग, प्रथम संस्करण 1966 पृष्ठ–342

पाश्चात्य साहित्य के संपर्क के कारण बंगला के माध्यम से हिंदी कहानियों का आरंभ हुआ जिसकी अनुकूल भूमि हमारे यहाँ तैयार थी। पश्चिमी कहानी का स्वरूप दिखाते हुए आचार्य नंददुलारे वाजपेयी लिखते हैं–''मध्ययुग में सामंती समाज का अंत होने पर जब नवीन औद्योगिक सभ्यता का आविर्भाव हो रहा था और नगरों में नवीन मध्यवर्ग की सत्ता स्थापित हो रही थी, उसी समय कहानी के साहित्यांग का आविर्भाव हुआ। इस प्रकार कहानी एक ओर गद्य साहित्य के निर्माण और विकास का समकालीन है और दूसरी ओर वह मध्यवर्ग के उत्थान का समसामयिक है।''[32] अतः कहानी और मध्यवर्ग का प्रादुर्भाव साथ–साथ ही हुआ। डॉ. बच्चन सिंह भी मानते हैं–''पाश्चात्य देशों तथा भारतवर्ष में कहानियों के आविर्भाव और मध्यवर्ग के उदय में एक नैसर्गिक समानंतरता दिखाई देती है।''[33] विदेशियों ने भारत को एक ही बार में हाथ में नहीं लिया। उन्होंने पहले बंगाल से लेकर पंजाब तक के भू क्षेत्र को अपने अधीन किया जिसमें उन्हें सन् 1757 से 1857 तक का समय लग गया था। भारत का जो भाग अंग्रेजों के अधीन पहले हुआ वहाँ सबसे पहले अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ–साथ डाक, रेल, तार, व्यवस्था का आरंभ भी हुआ। इसलिए वहाँ अन्य स्थानों की तुलना में मध्यवर्ग का उत्थान भी पहले हुआ। इस प्रकार भारत में परिस्थिति और वातावरण के अनुरूप मध्यवर्ग का उदय और उत्थान हुआ।

पाश्चात्य देशों में मध्यवर्ग के उदय की परिस्थितियाँ भारत से भिन्न थी। वहाँ औद्योगिकरण के फलस्वरूप सामंती समाज का अस्तित्व मिटने से मध्यवर्ग का विकास देखा गया है जबकि भारत के मध्यवर्ग के विकास में अंग्रेजी शिक्षा सहायक हुई है। डॉ.

---

[32] आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, वी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1986 पृ0, 21

[33] आचार्य रामचंद्र शुक्ल : 'हिंदी साहित्य का इतिहास', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 2013 पृष्ठ–342

सुषमा धवन भी कहानी का उद्‌भव और विकास, मध्यवर्ग के उदय और विकास से अभिन्न रूप से संबद्ध मानती है। उन्होंने यह भी माना है कि ''प्रेमचंद में व्यक्ति सत्य और व्यक्ति के महत्त्व की स्थापना, उस समय के मध्यवर्ग के उदय तथा उसकी सुधारवादी चेतना का सूचक है। बाद में प्रेमचंद के दृष्टिकोण में जो परिवर्तन हुआ वह मध्यवर्ग के विकास एवं ह्रास का द्योतक है।''[34] वास्तव में मध्यवर्ग का ह्रास प्रेमचंद के जीवन काल में नहीं' बल्कि द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत में दिखाई देता है और इससे भी पहले सन् 1929 ई. के आस–पास आर्थिक मंदी के फलस्वरूप मध्यवर्ग विचलित दिखता है।

हिंदी साहित्य में कहानी विधा मध्यवर्ग के द्वारा ही उद्‌भूत होती है और वह चेतना के द्वारा जिस नए परिवेश को पाती है वह चिंतन मध्यवर्गीय चिंतन के द्वारा उद्‌भूत होता है। साहित्यिक–सामाजिक परिवेश में देखा जाए तो यह कहना उचित होगा कि कहानी मध्यवर्ग के साथ–साथ विकसित होता है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत में औद्योगिकरण का विकास धीरे–धीरे हो रहा था, तब इसी के मध्य जिस मध्यवर्ग का अंग्रेजी शिक्षा के बाद जन्म हुआ, उसका जीवन व्यवहार, महत्त्वकांक्षाएँ, कार्यक्षेत्र इन सब का विवरण हमें मध्यवर्ग की चेतना के साथ होता है। इसलिए कहानी कला के आविर्भाव का सामाजिक प्रसंग मध्यवर्ग के साथ जुड़ जाता है। ''हिंदी साहित्य में कहानियों के विकास की एक विशेष परंपरा देखी जा सकती है' क्योंकि यह परंपरा मध्यवर्ग के उदय होते ही अपने को विभिन्न धाराओं में बाँटकर अपने को गतिशील करती रही है और यह गतिशीलता कहानियों में परिवेश के सारे तत्वों को अपनें में समेट लेती है। कहानी चाहे सामाजिक, व्यक्तिवादी मनोवैज्ञानिक, सभी में अन्यवर्ग की

---

[34] आचार्य रामचंद्र शुक्ल : 'हिंदी साहित्य का इतिहास', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 2013 पृष्ठ–232

अपेक्षा कहानीकारों ने मध्यवर्ग को अधिक यथार्थता के साथ कलमबद्ध किया है। इस कलमबद्धता का आधार लेखक के जीवनानुभव रहे है' क्योंकि हिंदी के अधिकांश कहानीकार मध्यवर्ग से आए हैं। सामान्यतः साहित्य मध्यवर्ग की रचना होता है। आधुनिक युग में विभिन्न भाषाओं में साहित्य रचना करने वाले अधिकांश साहित्यकार मध्यवर्ग से हैं । स्वभाविक रूप से साहित्यकार मध्यवर्ग में ही उत्पन्न होते हैं' क्योंकि यह वर्ग बुद्धिजीवियों का है जो अपनी अस्तित्व, प्रतिष्ठा व उन्नति चाहता है जिसके लिए वे अन्य पर निर्भर हैं। हर बार, हर परिस्थिति व चीजों के प्रतिकूल यह वर्ग निराशा, अशांति आदि बीमारियों से घिरा रहता है जिससे उसका मन मस्तिष्क सक्रिय रहता है। संवेदनशील ज्यादा होता है जिससे ये वर्ग साहित्य सृजन में प्रवृत्त होते हैं। हिंदी का आधुनिक साहित्य समग्रतः इसी वर्ग की रचना है। राजेंद्रयादव प्रेमचंद को मध्यवर्ग का सबसे बड़ा चितेरा कहते हैं।''[35]

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी :

हिंदी के प्रारंभिक कहानियों की रचना जिस काल में हुई उस समय मध्यवर्गीय जीवन दृष्टि अपना विकास कर रही थी। इसलिए इस युग के अधिकांश कहानीकार मध्यवर्ग के थे। उन्होंने अपने कहानियों के पात्रों का चुनाव मध्यवर्ग से किया जो मध्यवर्गीय जीवनानुभव की देन है। उस समय कहानी यथार्थवादी जीवन की रचना होने के कारण तेजी से उभरकर समाज के केंद्र में आ रही थी। स्वाभाविक है कि मध्यवर्गीय कहानीकार मध्यवर्ग को अनदेखा या उपेक्षित नहीं कर पाये। उस समय के कहानीकारों ने सामाजिक चित्रण पर कम रूचि दिखायी है।

इस युग में पाश्चात्य शिक्षा एवं संस्कृति के प्रभाव स्वरूप कहानीकारों में दो वर्ग

---

[35] भट्ट कविताः'अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग', वी.आरपब्लिशिंग, द्वितीय संस्करण 1986 पृष्ठ–99

दृष्टिगोचर होते हैं। पहला बुद्धिजीवि वर्ग जिन्होंने मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं, समस्याओं, भावनाओं आदि को लेकर कहानियाँ लिखी। इस वर्ग में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'गुल बहार', मास्टर भगवानदास कृत 'प्लेग की चुड़ैल', गिरिजादत्त वाजपेयी कृत 'पंडित और पंडितानी', बंग महिला कृत 'दुलाईवाली' आदि उल्लेखनीय है। दूसरा वह वर्ग है जो ऊपरी चकाचौंध से प्रभावित या भ्रमित होकर कहानी की ओर अग्रसर हुए। इनमें इंशाअल्लाह खाँ कृत 'रानी केतकी की कहानी', राजा शिवसिंह प्रसाद 'सितारे हिंद' कृत 'राजा भोज का सपना', राधाचरण गोस्वामी कृत 'यमलोक की यात्रा' आदि उल्लेखनीय है।

प्रेमचंदपूर्ववर्ती युग में मुख्यतः उच्चवर्गीय समाज के जीवन की घटनाओं और रोमांस के लोकरंजनकारी कहानियाँ लिखी गई। शोषण, अधिनता के भेड़ियों में जनता का जीवन समस्याओं और निराशाओं से घिरा हुआ था। अधिकांश जनता अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित थी जिससे पाठकों के संस्कार भी उन्नत नहीं थे। अतः कुछ कहानिकारों ने जनता के मनोरंजन को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखने लगे और अपनी रूढ़िवादी और परंपरावादी दृष्टिकोण के कारण मध्यवर्गीय चित्रण परंपरा में अपना योगदान न दे पाये।

दूसरी ओर इसी काल में आर्य समाज, ब्रह्मसमाज जैसी सुधारवादी संस्थाओं से प्रभावित होकर सामाजिक कहानियों की रचना भी की जा रही थी। इन कहानियों का मुख्य स्वर समाज का उत्थान करना था। इन्होंने परंपरावादी, आदर्शवादी एवं सुधारवादी दृष्टि से मध्यवर्गीय जीवन और उसकी समस्याओं को चित्रित किया। इन कहानियों में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इंदुमती', 'गुलबहार', 'गिरिजादत्त वाजपेयी की 'पंडित–पंडितानी', माधव राव स्प्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय', बंग महिला की 'दुलाईवाली', जय शंकर प्रसाद की 'ग्राम', वृन्दावन लाल

वर्मा की 'राखीबंध भाई', चंद्रधर शुर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' आदि उल्लेखनीय हैं। चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी मध्यवर्गीय समाज से संबंधित है। इस कहानी के चरित्र लहना सिंह और सूबेदारनी दोनों मध्यवर्गीय चरित्र है। इस कहानी कें माध्यम से मध्यवर्गीय पवित्र प्रेम, त्याग और बलिदान को अभिव्यक्त किया है। इसी प्रकार उनकी 'सुखमय जीवन' और 'बुद्धू का काँटा' भी मध्यवर्गीय समाज से संबंधित हैं।

बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में मध्यवर्गीय समाज को आधार बनाकर कहानी की रचना करने वाले हिंदी के कई महत्त्वपूर्ण कहानीकार और कहानी सामने आई। जैसे जय शंकर प्रसाद की 'ग्राम' राजा राधिकारमण की 'कानों में कंगना' और चतुरसेन शास्त्री की 'गृहलक्ष्मी' आदि। इन कहानियों के प्रकाशन से सिद्ध होता है कि इस प्रारंभिक काल में मध्यवर्गीय समाज को लेकर कहानियाँ छिट–पुट रूप से लिखी जाने लगी थी। इस युग की कहानियों में व्यापक परिप्रेक्ष्य में मध्यवर्ग का चित्रण नहीं मिलता, लेकिन परवर्ती कहानियों में मध्यवर्गीय चित्रण के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने में इन कहानियों की भूमिका निश्चित रूप से सराहनीय एवं पथ प्रदर्शक हैं।

प्रेमचंदयुगीन कहानियों का हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान है। इस युग में कहानी कल्पनालोक को त्याग कर, उच्चवर्गीय समाज के चित्रण के बजाए मानव के विविध पक्षों का चित्रण यथार्थ के आधार पर किया जाने लगा था। किंतु धीरे–धीरे इसमें यथार्थ का आग्रह बढ़ता गया और अंत में आदर्श की धुंधली रेखाओं के चिह्न ही शेष रह गए।''[36] भारतीय इतिहास को देखें, तो इस युग में सामाजिक परिवर्तन के साथ–साथ देश में राजनीतिक संघर्ष और आर्थिक संकटों की समस्या से भारतीय

[36] भट्ट कविताः'अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग', वी.आरपब्लिशिंग, द्वितीय संस्करण 1986 पृष्ठ–25

जनता संघर्ष कर रही थी। भारतीय मध्यवर्ग में यह संघर्ष विशेष रूप से देखने को मिल रहा था। पूंजीवाद के विकास के साथ–साथ मध्यवर्ग का भी विकास इस युग में हो रहा था। ''भारतीय समाज में मध्यवर्ग ही प्रमुख था, अतः मध्यवर्ग ही कथाकारों का मुख्य उपजीव्य रहा। इसके नानावर्णों और विविध आयामी रूप ने कथाकारों को आकृष्ट किया।''[37]

कथा–साहित्य में प्रेमचंद का आगमन क्रांतिकारी परिवर्तन का सूचक सिद्ध हुआ। जिस प्रकार प्रेमचंद 'उपन्यास सम्राट' कहलाए उसी प्रकार कहानी के क्षेत्र में भी अद्वितीय रहे। उनके आगमन से कहानी के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई। उनका कहानी विधा को उन्नत करने में विशेष योगदान रहा। उन्होंने इस काल के अनेक लेखकों का दिशा–निर्देश किया जिससे वे युग के जीवन को वाणी प्रदान कर सकें। इस संबंध में डॉ. नगेंद्र ने लिखा है–''हिंदी कहानी अपने विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं को पारकर वहाँ पहुँची जहाँ से हमें इसके श्रेष्ठ रूप के दर्शन होने लगते हैं।''[38]

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में पहली बार मध्यवर्गीय समाज का पूरा परिवेश, उसकी समस्याओं, कठिनाइयों, असमानताओं, आदर्शवादी रूप, सुधारवादी रूप के साथ–साथ प्रदर्शनप्रियता, स्वार्थी व आडंबरपूर्ण चरित्र को भी चित्रित किया। उनकी कहानियों के पात्र साधारण जन हैं। फिर भी उन्होंने मध्यवर्गीय समाज को अनदेखा नहीं किया। इनकी कहानियों का विषय अधिकांशतः गाँव की जिंदगी से संबंधित होते हुए भी छोटे नगरों, कस्बों, स्कूल–कॉलेजों, ऑफिसों आदि को भी अपनी कहानियों का

---

[37] भट्ट कविता : 'अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग', पृष्ठ–100

[38] हिंदी कहानी विविधा', इंदिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, बनारस, पृ0, 21

विषय बनाया है। इस संबंध में राजेंद्र यादव लिखते हैं–''वेश, अछूत, किसान, मजदूर, जमींदार, सरकारी अफसर, अध्यापक, नेता, क्लर्क समाज के प्रायः हर वर्ग पर प्रेमचंद ने कहानियाँ लिखी हैं और राष्ट्रीय चेतना के अंतर्गत विशेष उत्साह और आदर्शवादी आवेश से लिखी है। मगर मूलतः उनकी समस्या तत्कालीन दृष्टि से वांछनीय–अवांछनीय, शुभ–अशुभ के चुनाव की है। परिणति वांछनीय और शुभ की ओर उन्मुख होने की है। वह समस्या और उसका हल साथ ही देते हैं।''[39]

प्रेमचंद की कहानियों में मध्यवर्गीय चित्रण की दृष्टि से ईदगाह, अलग्योझा, शतरंज के खिलाड़ी, बड़े घर की बेटी, आत्माराम, पंच–परमेश्वर आदि उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में मध्यवर्गीय समाज व जीवन की समस्याओं, मनोवृत्तियों को बड़े मार्मिक व सूक्ष्म रूप से उभारा गया है।

इस युग में जयशंकर प्रसाद प्रेमचंद के समानांतर दूसरे प्रमुख कहानीकार हैं। जयशंकर प्रसाद की मध्यवर्गीय चित्रण की दृष्टि से आकाश दीप, पुरस्कार, रसिया गुंडा, इंद्रजाल, विराम आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। इन कहानियों में प्रेमी–प्रेमिकाओं की मनः स्थिति को भावनात्मक ढंग से उभार कर प्रेम की आदर्श एवं पवित्र झाँकी उपस्थित की गई है। साथ ही व्यक्ति मन के अंतर्द्वन्द्व को भी सूक्ष्मता से अभिव्यक्त किया गया है। प्रसाद जी ने निश्छल प्रेम, त्याग और बलिदान की भावना के माध्यम से पाठकों में विशेष प्रभाव को उत्पन्न किया है।

जैनेंद्र ने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग की अवसरवादिता, लालच, खोखलेपन और संकीर्णता को चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनकी महत्त्वपूर्ण कहानियाँ है– खेल,

---

[39] हिंदी कहानी विविधा', इंदिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, ज्ञानमण्डल प्रकाशन, बनारस, पृ0, 8

पत्नी, जाह्नवी, नीलम देश की राजकन्या, लाल सरोवर, फोटोग्राफी, भाभी, घुँघरू, दो चिड़िया, पाजेब आदि। 'पाजेब' में जैनेंद्र कुमार ने मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ, इच्छा–आकांक्षा, वस्तु के प्रति अविश्वास और मिथ्याचार को प्रकट किया है।

इस युग में उग्र जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक विचारों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों और मिथ्याचार परंपराओं पर खुलकर प्रहार करने के साथ–साथ मध्यवर्गीय आदर्शवादिता, आडंबरपूर्ण जीवन शैली, भ्रष्टाचारी मनोवृत्ति का पर्दाफाश किया है। इस दृष्टि से उनकी चिनगारियाँ, शैतान मंडली, चाकलेट, बलात्कार, इंद्रधनुष, दोजख की आग, निर्लज्जा आदि प्रमुख हैं।

इसी प्रकार यशपाल की कहानियाँ सामाजिक विषमताओं, मध्यवर्गीय समाज के खोखलेपन पर व्यंग्य करते हुए मध्यवर्गीय स्वार्थ को उजागर करती हैं। साथ ही इनमें उदारता व करुणा का पुट भी देखने को मिलता है। इन कहानियों में 'कुत्ते की पूँछ', 'परदा', 'महादान', 'आदमी' और 'बच्चा' विशेष हैं। इसके अतिरिक्त अश्क, भगवतीचरण वर्मा, इलाचंद्र जोशी, अमृतलाल नागर, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' आदि ने भी मध्यवर्गीय समाज की कथावस्तु का चयन करते हुए उनकी सामाजिक समस्याओं यथा दहेज प्रथा, दांपत्य जीवन, नारी समस्या आदि को उजागर किया है।

प्रेमचंदयुगीन प्रमुख कहानीकारों एवं उनकी कहानियों के आधार पर हम कह सकते हैं कि इस युग में मध्यवर्गीय समाज को व्यापक स्थान दिया गया। इस दृष्टि से इस युग का विशेष महत्त्व है। प्रेमचंद ने हिंदी कहानी की मजबूत नींव ही खड़ी नहीं की, अपितु समाज के सबसे बड़ा वर्ग कहलाने वाला मध्यवर्ग की समस्याओं, चरित्रों आदि का भी सूक्ष्मता से चित्रण किया। इस युग के जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी आदि ने मनोविश्लेषण को आधार बनाते हुए कहानी की एक नई धारा प्रवाहित की। इस प्रकार प्रेमचंद युग में हिन्दी कहानी का श्रेष्ठ रूप उपस्थित हुआ।

इस युग में भौतिक स्तर के साथ–साथ मानसिक स्तर पर भी अनेक परिवर्तन हुए। द्वितीय महायुद्ध की घटना एक ऐसी ऐतिहासिक घटना है जिसने यूरोप का भूगोल ही नहीं बदला' बल्कि समस्त देश के भूगोल को भी बदल कर रख दिया। इसी परिवर्तन के साथ ही मानवीय मूल्यों में भी तेजी से बदलाव आया। लोग एक तरफ वैज्ञानिक आविष्कारों व उनसे प्राप्त सुविधाओं को भोगते हुए भी दूसरी तरफ इन्हीं आविष्कारों से विनाश की आशंका से डरे–सहमें जीने पर मजबूर हो रहे थे। मानवीय जीवन में विशेष अजनबीपन, निराशा, अलगाव, घुटन और व्यर्थता का अनुभव किया जाने लगा। मानवीय जिंदगी अर्थहीन–सी लगने लगी।

प्रेमचंदोत्तर युग में भौतिकवाद, यांत्रिकता और बौद्विकता के कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की भी शुरूआत हुई । नई मानवीय स्थितियों और नये यथार्थ तथा मानसिक स्तर पर मार्क्स और फ्रायड के दर्शन के कारण भी कहानीकार परंपरागत मूल्यों से हटकर बुद्धिगत मूल्यों की तरफ खींचे चले गए। इस युग के कहानीकारों को मार्क्स, फ्रायड आदि के सिद्धांतों ने विशेष प्रभावित किया' क्योंकि मध्यवर्ग की जर्जरित विशेषताएँ, रूढ़िवादी एवं परंपरावादी चरित्र से जकड़ा हुआ होने के कारण वे अपना उचित स्थान समाज में स्थापित नहीं कर पा रहे थे। इसी कारण वे कुंठित, उपेक्षित और निराशा के शिकार होते जा रहे थे। मध्यवर्ग के इन्हीं कुंठाओं को जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि कहानीकारों ने मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत किया है।

जैनेंद्र के द्वारा कहानियों में मनोविश्लेषण की परंपरा का विकास हुआ। जैनेंद्र ने मध्यवर्गीय समाज की स्थूल समस्याओं के बजाए व्यक्ति के सूक्ष्म मनोविज्ञान का चित्रण किया। असामान्य मनुष्य की मानसिक क्रिया–प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया है। इस दृष्टि से स्पर्धा, फाँसी, जयसंधि, एक रात, पाजेब एवं दो चिड़िया आदि उल्लेखनीय हैं

जिसमें उन्होंने मध्यवर्गीय व्यक्ति की मानसिक समस्याओं को चित्रित किया है।

अज्ञेय ने अपनी 'रोज', 'वृक्ष', 'पुरुष का भाग्य', 'कोठरी की बात', 'बसंत', 'अछूते फूल', 'पठार का धीरज' और 'सिगनेलर' आदि कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के खोखलेपन, जीवनहीनता, व्यक्ति की आंतरिक ऊहापोह, संघर्ष–चेतना, मानसिक संघर्ष, यांत्रिकता तथा स्त्री की पीड़ा को प्रभावशाली ढंग से उकेरा है। इसी परंपरा में इलाचंद्र जोशी की आहुति, दीवाली और होली, रोमांटिक छाया आदि कहानियाँ आती हैं जिसमें उन्होंने मध्यवर्गीय मनोविज्ञान के सत्यों को उजागर किया है। वहीं यशपाल के पींजड़े की उड़ान, वो दुनिया, उत्तमी की माँ, ज्ञानदान, सच बोलने की भूल आदि कहानियाँ वर्ग संघर्ष, यौन चेतना आदि को प्रस्तुत करती हैं। इस युग में सामाजिक विषयों को आधार बनाकर कहानियाँ लिखने वालों में उपेंद्रनाथ अश्क, यशपाल आदि लेखक हैं। इन्होंने प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाया है। इनकी कहानियों में आधुनिक समाज की विषमता, शहरी मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ, आर्थिक–सामाजिक विकृति और उनकी कमजोरियों पर व्यंग्य किया गया है। इस दृष्टि से पिंजरा, पाषाण, मोती, मौत (अश्क)' पराया सुख, हलाल का टुकड़ा, ज्ञानदान, कुछ न समझ सका, बदनाम (यशपाल) आदि उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् ''सन् 1950 के अनंतर हिंदी कहानी के क्षेत्र में एक नये आंदोलन का प्रवर्तन हुआ जिसे 'नई कहानी' आंदोलन की संज्ञा दी गई। इस आंदोलन के उन्नायकों ने घोषित किया कि नई कहानी का लक्ष्य नये भाव बोध या आधुनिकता–बोध पर आधारित जीवन के यथार्थ अनुभव का चित्रण करना है। उन्होंने कहानी पर किसी भी बाह्य तत्व विचार, सिद्धांत या उपदेश के आरोपण को अस्वीकार किया' क्योंकि उनके विचार से कलाकार या कहानीकार जीवन और समाज से किसी भी आदर्श या परंपरागत व्यवस्था से बंधा हुआ नहीं है– वह केवल अपने आप के प्रति

आबद्ध या प्रतिबद्ध है।''[40] राजेंद्र यादव के शब्दों में–''मानवता, राष्ट्रीयता, सत्य, धर्म, नैतिकता, प्राचीन गौरव आदि सब छलावे हैं जिनके प्रति किसी भी कलाकार का आस्थावान होना अनुचित है।'[41]

''1950 ई. के बाद की कहानियों में क्रमशः वैयक्तिकता का दबाव बढ़ता गया। कुछ देर के लिए स्वतंत्रता प्राप्ति का उल्लास आंचलिक कहानियों में अभिव्यक्त हुआ पर वह कहानी की विकास यात्रा का अस्थाई पक्ष था। शीघ्र ही स्वतंत्रता से प्राप्त होने वाले सुख के प्रति रोमानी मोह टूट गया और व्यक्ति एक तरह से कटाव या अलगाव के कठघरे में खड़ा हो गया।''[75] विशेष रूप से इसका प्रभाव मध्यवर्ग पर देखा गया। इस समय के प्रमुख कहानीकारों में मोहन राकेश, भीष्म साहनी, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, श्रीकांत वर्मा, उषा प्रियम्वदा, धर्मवीर भारती आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने मुख्यतः उच्च मध्यवर्गीय जीवन की स्थितियों एवं विसंगतियों, आधुनिकताबोध, कृत्रिमता, आडंबर प्रियता, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों के विघटन से उत्पन्न विषमताओं, अहंवादिता की प्रवृत्तियों, कामुकता, भोगलालसा, नारी–पुरूष संबंध, दांपत्य एवं पारिवारिक जीवन की ह्यसोन्मुखी अवस्थाओं आदि का यथार्थ चित्रण किया है। भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में आधुनिक भारत के शहरी मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर उनके आंतरिक अंतर्विरोधों, संस्कारों, उनके जीवन–यथार्थ, आजादी के बाद मध्यवर्गीय व्यक्ति की अमानवीयता, विसंगतियों, विडंबनाओं आदि को व्यंग्य के माध्यम से उद्घाटित किया है। इस दृष्टि से उनकी चीफ की दावत,

---

[40] राजेंद्र यादव गुप्त गणपति चंद्र : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण 1968, 'साहित्यिक निबंध', पृष्ठ–434

[41] राजेंद्र यादव गुप्त गणपति चंद्र : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, प्रथम संस्करण 1968, 'साहित्यिक निबंध', पृष्ठ–434

भाग्यरेखा, पाली, निशाचर, वाङ्चू, पहला पाठ आदि कहानियाँ प्रमुख हैं।

उच्च मध्यवर्ग को केंद्र में रखकर कहानी लिखने वालों में निर्मल वर्मा का भी प्रमुख स्थान है। उन्होंने अपनी कहानियों में मध्यवर्ग की एकांतिक जीवन, अंतर्मुखी, व्यक्तिपरक, निरंतर अकेले होते जा रहे व्यक्ति के अंतर्मन के अनेक पहलुओं, अस्मिता की तलाश अकेलापन, अलगाव, खोखलापन, मानवी संबंधों में आया ठहराव आदि को अपनी कहानी का माध्यम बनाया है साथ ही वर्तमान मनुष्य की गहन आंतरिक समस्याओं को भी उठाया है।

इस युग में कुछ कहानीकारों ने पुराने मूल्यों के प्रति रोमानी दृष्टि की अभिव्यक्ति के साथ–साथ युगीन संक्रमण के दबाव का भी अनुभव किया जिसके फलस्वरूप तनाव, मूल्यों की तलाश आदि संदर्भों को लेकर कहानियाँ लिखी गयीं। इस प्रकार के कहानीकारों में राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, शिवानी आदि प्रमुख हैं। राजेंद्र यादव ने अपनी कहानियों– जहाँ लक्ष्मी कैद हैं, अभिमन्यु की आत्मकथा, छोटे–छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, प्रतीक्षा, टूटना आदि में मध्यवर्गीय आधुनिक भावबोध की व्यापक पृष्ठभूमि तैयार की। इसी तरह मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक' आदि कहानियों में 1947 के भारत–विभाजन से उत्पन्न मनःस्थिति का चित्रण है तो 'एक और जिंदगी' में आज के मध्यवर्गीय जीवन की ट्रेजिक तनाव को गहराई से उद्घाटित किया गया है। कमलेश्वर ने 'देवा की माँ', नीली झील, खोई हुई दिशाएँ, माँस का दरिया आदि में महानगरीय बोध, अकेलेपन, बेगानगी की ट्रेजडी, मानवीय संवेदना और तनावों के बीच मूल्य को तलाशते हुए मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति की है।

आधुनिक नारी मन की स्थिति, मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन में पति–पत्नी के संबंधों में आये तनाव को स्वर देने वाले कहानीकारों में मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती,

शिवानी आदि प्रमुख हैं। मन्नू भंडारी ने 'मैं हार गई हूँ', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है' और 'त्रिशंकु' आदि कहानियों में नारी मन में उठने वाले भावों को, पुरुष की ईर्ष्या–शंकाओं को, मध्यवर्गीय परिवार के बीच बदलते संबंधों को उद्‌घाटित करने के साथ–साथ मुक्त प्रेम, मुक्त यौन–संबंधों, आचरण और व्यवहार में खोखलापन आदि को भी चित्रित किया है। इसी परंपरा में कृष्णा सोबती, शिवानी आदि कहानीकारों ने भी स्त्री की आत्मसजगता, नौकरीपेशा स्त्री की समस्याओं, परंपरागत समाज की घुटन और इस घुटन से निकलने की छटपटाहट, स्त्री की पीड़ा–यातना, नारी की विवशता तथा संबंधों के अचानक बदलने और झूठा पड़ जाने से उत्पन्न पीड़ा आदि को बड़ी संवेदना के साथ व्यक्त किया है। इस दृष्टि से शिवानी की 'पुष्पाहार', 'सोबती की दादी अम्मा', 'गुलाब जल', 'गंडेरियाँ', 'कहीं नहीं कोई नहीं', 'ऐ लड़की' आदि दृष्टव्य है।

छठे दशक में आंचलिक कहानियाँ भी लिखी गई। ग्रामांचल के कहानीकारों में शिवप्रसाद सिंह, फणीश्वरनाथ रेणु, मार्कण्डेय, राजेंद्र अवस्थी आदि प्रमुख हैं। इन्होंने ग्रामीण मध्यवर्गीय जीवन शैली को अपनी कहानियों में स्थान दिया। शिवप्रसाद सिंह की 'मुर्दा सराय', 'आरपार की माला', 'इन्हें भी इंतजार है', 'मार्कण्डेय की गुलरा के बाबा', 'हंसा जाई अकेला', 'रेणु की गमकता चावल', 'धान की झुकी हुई बालियाँ', 'आंगन की धूप', 'बैलों की घंटियाँ', 'लाल पान की बेगम', 'तीसरी कसम' आदि दृष्टव्य हैं। इन कहानियों में स्वतंत्रता के पश्चात् गाँव से शहरों में बस जाने पर भी गाँव के प्रति लगाव, अतीत के प्रति रोमानी दृष्टिकोण, गाँवों में उगते वर्ग–संघर्ष, गाँवों की संस्कृति आदि को चित्रित किया गया है।

इस समय ग्रामांचल से हटकर कस्बों और शहरों की कहानियाँ भी लिखी गयीं। इस प्रकार की कहानी लिखने वालों में अमरकान्त, रांगेय राघव, शेखर जोशी आदि आते हैं। इन कहानीकारों ने कस्बों एवं छोटे–छोटे नगरों का चित्रण करते हुए विभिन्न

विडंबनाओं, विषमताओं को उद्‌घाटित किया है। मध्यवर्ग के विभिन्न लोगों के जीवन की स्थितियों के चित्रण के साथ–साथ आज की व्यवस्था से पीड़ित मनुष्य की असहाय स्थिति एवं उनकी संवेदनाओं को बड़े सहानुभूतिपूर्ण ढंग से उकेरा है। इसी युग में हरिशंकर परसाई, रवीद्र कालिया, शरद जोशी आदि कहानीकारों ने आधुनिक शासन व्यवस्था, राजनैतिक, भ्रष्टाचार, अफसरों द्वारा किये गए घोटाले आदि पर हास्य–व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ लिखीं। इसके अतिरिक्त आधुनिक सभ्यता, जीवन पद्धति की विडंबनाओं पर भी व्यंग्यपूर्ण कहानियाँ लिखी गई। इस दृष्टि से हरिशकर परसाई की 'भोलाराम का जीव' और सदाचार का 'ताबीज' दृष्टव्य हैं।

सातवें–आठवें दशक को मूलतः मोहभंग का समय कह सकते हैं। इस युग में यथार्थ का चित्रण भी मिलता है। वैसे तो स्वतंत्रता के पश्चात् ही मोहभंग की दशा को देखा जाने लगा था' परंतु 1962 में चीन के आक्रमण से पुरानी पीढ़ी के प्रति नई पीढ़ी के लोगों में आक्रोश, क्षोभ और मोहभंग और गहराता चला गया। इसके साथ ही मध्यवर्ग की समस्याएँ भी बढ़ती चली गई। अकेलेपन का अहसास, ऊब आदि की वजह से उनकी विद्रोहात्मक प्रवृत्तियाँ और अधिक उभरने लगी। सातवें दशक के मध्य युवाविद्रोह की जो लहर आयी उसके फलस्वरूप बेलाग और दो–टूक बात करने की प्रवृत्ति को और बल मिला। पुरानी व्यवस्था के विरोध में एक प्रकार का बौद्धिक–राजनीतिक आंदोलन नहीं चल पड़ा।'[42] इस दशक के कहानीकारों में ज्ञानरंजन, उदय पकाश, रवींद्र कालिया, महेंद्र भल्ला, काशीनाथ सिंह आदि प्रमुख हैं।

ज्ञानरंजन ने अधिकतर कहानियाँ मध्यवर्गीय परिवार, उनकी समस्याओं, कुंठाओं व रिश्तों को लेकर लिखी हैं। उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय समाज की तस्वीर ही नहीं'

---

[42] सं. नगेंद्र : 'हिंदी साहित्य का इतिहास', वी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1986 पृष्ठ–686

बल्कि वास्तविक घटनाओं को भी उभारती हैं साथ ही उनकी कहानियाँ वीभत्सता, अश्लीलता और कुरूपता को भी प्रस्तुत करती हैं। कलह, पिता, यात्रा, फेंस, इधर और उधर, संबंध आदि इनकी प्रमुख कहानियाँ हैं जिसमें मध्यवर्गीय जीवन के कटु सत्य को उजागर किया गया है।

उदय प्रकाश ने 'तिरिछ', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'वारेन हेस्टिंग्स का साँड', 'छप्पन तोले का करघन' आदि कहानियों में नये ढंग से सामाजिक समस्याओं को, मध्यवर्गीय मनुष्य की संघर्ष–चेतना व जिजीविषा को, बदलते मानवीय मूल्यों व संबंधों को, उनके नैतिक, राजनैतिक पतन को, शहरी मध्यवर्ग की संवेदनहीनता, धनलिप्सा, धन–प्रतिष्ठा–पद की ललक, चापलूसी, स्वार्थ, खोखलापन आदि को व्यक्त किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने समाज व परिवार में हो रहे विभिन्न परिवर्तनों, रूढ़ियों और विसंगतियों को भी चित्रित किया गया है।[43]

नवें दशक के कहानीकारों ने भी मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों, बदलते संबंधों के साथ–साथ अलगाव, तनाव, सामाजिक विडंबना, राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक समस्या आदि को अपनी कहानियों में स्वर दिया। सुरेंद्र मेनन, अशफाक, केशव दुबे, सत्येंद्र कुमार, नवनीत मिश्र, पद्मा सचदेव, सुषमा देवी, सुधा, पुष्पा सक्सेना आदि इस दशक के प्रमुख कहानीकार हैं।''कथा–साहित्य हमेशा से बुद्धिजीवी और मध्यवर्ग का महाकाव्य रहा है। जिये जाने वाले जीवन के प्रति उसकी तत्कालीन प्रतिक्रिया कथा साहित्य में सबसे अधिक होती है।''[44] इसीलिए कहानियों में आर्थिक और नैतिक समस्याओं के साथ–साथ मध्यवर्गीय जीवन के सत्यों को कहानियों का कथ्य बनाकर

---

[43] सं. नगेंद्र : 'हिंदी साहित्य का इतिहास', वी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1986 पृष्ठ–690

[44] भट्ट कविता : 'अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग', विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृष्ठ–111

उसकी अभावग्रस्तता, संबंधों की जटिलता, विषमता, पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं को कहानियों में चित्रित किया गया है।

अतः कहा जा सकता है कि हिंदी कहानियों में चित्रित मध्यवर्ग का चित्रण प्रेमचंद से पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। प्रेमचंद युग और फिर प्रेमचंदोत्तर युग में मध्यवर्ग कहानियों के केंद्र में आया और मध्यवर्ग की जीवनशैली, विडंबना, विसंगति, संबंधों की जटिलता आदि कहानियों के विषय बनने लगे।

मध्यवर्ग के चारों ओर फैली समस्याओं का इस युग में सफल अंकन हुआ जो आज की कहानियों में अविरल रूप से गतिशील है।

(ख) अमरकान्त का उपन्यास विधा में स्थान

साहित्य में जिस उपन्यास विधा से हम परिचित हैं वह आधुनिक युग की देन है। अंग्रेजी के 'नॉवल' शब्द का प्रयोग हिंदी में उपन्यास के लिए किया जाता है। 'न्यू इंगलिश डिक्शनरी' में नॉवल की परिभाषा इस प्रकार दी गई है–''नॉवल वह विस्तृत गद्यात्मक आख्यान प्रधान रचना है जिसमें वास्तविक जीवन का अनुकरण करने वाली घटनाओं और पात्रों का एक व्यवस्थित कथावस्तु के रूप में वर्णन रहता है।''[45] पाश्चात्य विद्वानों ने उपन्यास के संबंध में अलग–अलग परिभाषाएँ दी हैं। ''रॉल्फ फॉक्स ने उपन्यास को महाकाव्य की अनवर्ती विधा मानते हुए भी, बदले हुए समय में उसकी भूमिका को अधिक क्रांतिकारी माना है क्योंकि उसका लक्ष्य है नये मानव की आवश्यकताओं को पूरा करना और उसकी आशा, आकांक्षाओं को व्यक्त करना तथा उसकी तूफानी दुनिया को चित्रित करना।''[46] रॉल्फ फॉक्स ने उपन्यास को बुर्जुआ

---

[45] डॉ. अमरनाथ : 'हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली', राजकमल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृष्ठ–129

[46] आलोचना, अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण (जनवरी–मार्च, 2001)

साहित्य की सबसे श्रेष्ठ रचना के रूप में देखते हुए मानव–जीवन और साहित्य के बीच मजबूत संबंधों का मूल्यांकन किया है।

अर्नेस्ट ए. बेकर के अनुसार–''गद्यमय कल्पित आख्यान द्वारा जीवन की व्याख्या है।''[47] जार्ज मूर ने उपन्यास की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है–''उपन्यास समकालीन इतिहास के अतिरिक्त और कुछ नहीं। जिस युग में हम जी रहे हैं, उसके सामाजिक पक्ष का बिल्कुल पूर्ण और सही–सही पुनर्निर्माण है।''[48] जार्ज मूर का मानना है कि उपन्यास समाज के संबंध में चिंतन–मनन करके अध्ययन करने वाला, समय की अपेक्षा करने वाला साहित्य है। साथ ही वे इसे जीवन के सत्यों को हू–ब–हू उद्घाटित करने वाला मानते हैं। वैब्स्टर ने उपन्यास की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उसे इस प्रकार परिभाषित किया है–''उपन्यास एक ऐसा कल्पित, विशालकाय और गद्यमय आख्यान है जिसमें एक ही कथानक के अंतर्गत यथार्थ जीवन का निरूपण करने वाले पात्रों और उनके क्रियाकलापों का चित्रण किया जाता है।''[49] इसी संदर्भ में पर्सी ल्यूब्बाक की उक्ति है–''जो अपने प्रतिपाद्य विषय के प्रति अधिकाधिक न्याय करे, उपन्यास के स्वरूप की इसके अतिरिक्त कोई परिभाषा नहीं है।''[50] उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई उपन्यास की परिभाषा उपन्यास के स्वरूप को समझने में एक दृष्टि प्रदान करती है। उपन्यास को भारतीय विद्वानों ने भी परिभाषित करने की कोशिश की है जिनमें से कुछ परिभाषाएँ कुछ इस प्रकार है–

---

47 चर्च रिचर्ड : :द ग्रोाि ऑफ द इंग्लिश नॉलेज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ– 8

48 आलोचना, पंकज बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण (जनवरी–मार्च, 2001)

49 बैब्स्टर : 'इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ लेंग्वेज', पंकज बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण पृष्ठ–1670 2014

50 ल्यूब्बाक पर्सी : 'द क्राफ्टर ऑफ द इंग्लिश नॉवल', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद पृष्ठ–40, 2012

हिंदी उपन्यास को परिभाषित करते हुए रणवीर रांगा लिखते है–''उपन्यास शब्द 'उप' और 'नि' पूर्वक 'अस्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय जोड़ने से व्युत्पन्न हुआ। 'अस्' का अर्थ होता है– रखना, स्थिर रखना, प्रक्षेपण करना आदि। इसी आधार पर उपन्यास शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ हुआ– ''वह रचना जिसमें जीवन के अनेक पक्षों का प्रक्षेपण किया गया है।''[51] इस प्रकार उपन्यास जीवन के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करने वाली विधा है।

'हिंदी साहित्य कोश' में उपन्यास के संबंध में लिखा है–''यह शब्द 'उप' = समीप तथा 'न्यास' = थाती के योग से बना है, जिसका अर्थ हुआ(मनुष्य के) निकट रखी हुई वस्तु अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिंब है, इसमें हमारी ही कथा, हमारी ही भाषा में कही गयी है।''[52]

महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद मानते हैं कि उपन्यास वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है। इसलिए वे लिखते हैं–'' मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर पकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।''[53]

डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र ने उपन्यास को यथार्थ का प्रतिबिंब और समाज सापेक्ष मानते हुए कहा है–''युग की गतिशील पृष्ठभूमि यथार्थ शैली में स्वाभाविक जीवन की

---

[51] रांगा रणवीर : 'हिंदी उपन्यास में चरित्र–चित्रण का विकास', विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर पृष्ठ–8, 2017

[52] वर्मा धीरेंद्र : 'हिंदी साहित्य कोष', अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण पृष्ठ–139

[53] मुंशी प्रेमचंद : 'कुद विचार', पंकज बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण पृष्ठ–38

एक व्यापक झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्यकाव्य उपन्यास कहलाता है।''[54] उपन्यास का संबंध मनुष्य के सामाजिक जीवन व युग से ही नहीं' बल्कि वह मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को यथार्थ रूप में चित्रित करके साहित्य में उसे चिरस्थायी भी बनाता है। जबकि अन्य विधाओं में यह संभव नहीं हो पाता है। इसी संदर्भ में आचार्य नंददुलारे बाजपेयी ने कहा है–''साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा सामूहिक मानव–जीवन अपनी समस्त भावनाओं और चिंताओं के साथ संपूर्ण रूप से व्यक्त हो सकता है। मानव–जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने में जितना अवकाश उपन्यास में मिलता है उतना अन्य किसी साहित्यिक उपकरणों में नहीं।''[55]

उपन्यास के संबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं–''उपन्यास नामक साहित्यांग के यथार्थवादी होने में ही मैं उसकी सफलता मानता हूँ।''[56] इस प्रकार हजारी प्रसाद द्विवेदी उपन्यास में यथार्थवाद के गुण को आवश्यक मानते हैं, जो निर्विवाद है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यास मानव–जीवन के प्रत्येक पहलुओं को यथार्थ रूप में चित्रित करने वाली विधा है। यह एक ऐसी विधा है जो समाज की जटिल समस्याओं को ही नहीं' बल्कि उस जटिल समस्या का समाधान भी खोज कर निकालती है। जीवन और जगत् का यथार्थ उपन्यास में जितनी सच्चाई से उद्घाटित होता है उतना अन्य किसी विधा में नहीं होता है। यही कारण है कि आज उपन्यास निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है और आधुनिक साहित्यिक विधाओं में प्रमुख है।

---

[54] मिश्र भगवतसवरूप : 'काव्य– शास्त्र', अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण पृष्ठ–79

[55] वाजपेयी नंददुलारे : 'नया साहित्य–नये प्रश्न', अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण पृष्ठ–32

[56] द्विवेदी हजारी प्रसाद : 'विचार और वितर्क', अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण पृष्ठ–94–96

उपन्यास के माध्यम से हम मानव जीवन के हर एक पहलुओं से जुड़ते हुए गहराई से देखते–परखते एवं अनुभव करने लगते हैं। उपन्यास मानव जीवन के पुराने पक्षों का ही नहीं' बल्कि नए विकसित होने वाले पक्षों व दिशाओं को भी अभिव्यक्त करता है। मानव जीवन की तरह उपन्यास को भी परिभाषित करना जटिल ही प्रतीत होता है। अतः ''उपन्यास को जादू–टोना, अय्यारी, तिलिस्म से लेकर धर्मोपदेश, समाज–सुधार, नैतिक शिक्षा, इतिहास, विभिन्न राजनीति विचारधाराओं और दार्शनिक मस्तिष्क की उलझनों, यौन संबंधों की जटिलताओं और समाज की विकृतियों तक का बोझ ढोना पड़ता है।''[57]

''अन्य विधाओं की अपेक्षा उसका स्वरूप 'लूज' है, इसलिए उसमें अपने भीतर सब कुछ समाविष्ट कर लेने की क्षमता होती है।''[58] उपन्यास मानव जीवन की उलझनों, मानवीय क्रिया कलापों, चरित्रों के गुण–दोषों को, प्रतिदिन घटित होने वाली घटनाओं को एवं यथार्थ के विभिन्न पक्षों को ही नहीं' बल्कि भाषा व संवाद की वक्रता, वातावरण परिवेश का भी सूक्ष्मता से चित्रित करता है। उपन्यास में विस्तार रूप उपस्थित होने के साथ–साथ जीवंतता के गुण भी विद्यमान होते हैं। जिस प्रकार एक दर्पण में व्यक्ति अपना प्रतिबिंब स्पष्ट देख लेता है, उसी प्रकार उपन्यास में मानवीय जीवन के विविध पहलुओं को स्पष्ट देखा जा सकता है। अतः उपन्यास जीवन–दर्पण है जिसमें जीवन का विशाल रूप स्पष्ट परिलक्षित होता है।

''जीवन और जगत् की प्रतिछाया अपनी संपूर्णता में उपन्यास में ही चित्रित हो

---

[57] सिंह कुंवरपाल : 'हिंदी उपन्यास–सामाजिक चेतना', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–38–39

[58] मिश्र रामदरश : 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा', वी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 13

पाती है।''[59] साहित्यकार समाज से ही विषय का चुनाव करते हुए, उन्हीं से वास्तविक घटनाओं को लेकर उपन्यास में अभिव्यक्त करता है। सभ्यता, संस्कृति जीवन जिस तरह विकासशील है उसी तरह उपन्यास भी विकासशील है। उपन्यास और जीवन को अलग कर पाना असंभव बन गया है। इस प्रकार दोनों में गहरा संबंध है। ''मनुष्य की जीवन–दृष्टि से जैसे–जैसे अलौकिक तत्वों का बहिष्कार होता चला जाता है, वैसे–वैसे ही यथार्थ की विशेष जिज्ञासा में वृद्धि होती चली जाती है और यही अनुपातित दृष्टि यथार्थवादी जीवन के साथ जुड़ते हुए उपन्यास की रचना को पूर्ण करती है।''[60]

उपन्यास के संदर्भ में प्रेमचंद लिखते हैं–'' उपन्यास एक पूरा–का–पूरा बाग है, जिसमें अनेक रंगारंग पौधे, छोटे–छोटे फलदार वृक्ष, गगनचुंबी छतनार पेड़, सतरें और कहीं छिपे–छिपे कोने में सीलन और सड़ते हुए पत्ते भी हैं, जहाँ कटी–छँटी पगडंडियाँ, रविशें भी हैं और विशाल सड़क भी जो बाग की सैर करने वालों को इन सब तक पहुँचाती है।''[61]

अतः हम कह सकते हैं कि एक साहित्यकार समाज से घटनाओं, समस्याओं, पात्रों, व्यापारों को इकट्ठा करके उपन्यास का सृजन करता है।

उद्‌भव–विकास :

आधुनिक साहित्य में जिस उपन्यास के रूप–रचना के विकास से हम परिचित हैं, उसका उद्‌भव यूरोप से माना जाता है। इसका संबंध रोमांटिक कथा–साहित्य से है और यह रोमांटिक कथा–साहित्य मूल रूप से भारतीय प्रेमाख्यानों से प्रेरित माना जाता

---

[59] जेम्स हेनरी : 'दी आर्ट ऑफ फिक्शन', 2021 पृष्ठ–393

[60] भट्‌ट कविता : 'उपेंद्रनाथ अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग', वी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–25

[61] रौनक रमेश : 'गिरती दीवारें–दृष्टि–प्रतिदृष्टि', लोक भारती प्रमाणित हिन्दी शब्दकोष पृष्ठ–54

है। संस्कृत में पंचतंत्र, कादंबरी, हितोपदेश आदि गद्य, जो लिखे गए उसमें औपन्यासिकता के अतिरिक्त प्रेम, साहस और धैर्य के तत्वों की भी प्रधानता थी। सत्रहवीं सदी में स्पेन के लेखक सरवन्ते ने 'डानक्विकजोट' की रचना की। आगे चलकर फ्रांस में रोमानी और यथार्थवादी कथा–साहित्य की बहुत उन्नति हुई । दूसरी ओर सत्रहवीं–अठारहवीं सदी में इंग्लैंड में अनेक महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की रचना हुई । आगे चलकर इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी व रूस में अनेक उच्च कोटि के उपन्यासों की रचनाएँ हुई।''[62] अतः स्पष्ट है कि यूरोप के विभिन्न जगहों में अठारहवीं शताब्दी के अंत तक आते–आते उपन्यास विधा का पूर्णतः विकास हो चुका था।

पुनर्जागरण काल में जब कुस्तुतुनिया, यूनान तथा रोम का पतन होने लगा, तो कलाकार, वैज्ञानिक तथा विद्वान् आदि वहाँ से यूरोप जाकर बसने लगे जिससे इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हुई, तो दूसरी ओर इटली में कला, साहित्य और स्थापत्य जैसे कलात्मक प्रवृत्तियों का विकास हुआ। ऐसे में जहाँ पूँजीपतियों ने बड़े–बड़े उद्योग शुरू किये वहीं मजदूर वर्ग भी गाँवों को छोड़कर नगरों की ओर प्रस्थान करने लगे। इसी समय उच्चवर्ग से अपेक्षा और निम्नवर्ग से उपेक्षा का भाव पाने वाले एक नए वर्ग का विकास हुआ जिसे मध्यवर्ग के नाम से अभिहित किया गया। इसी समय औपन्यासिक विधा का भी आविर्भाव हुआ। अतः उपन्यास और मध्यवर्ग का उदय साथ–साथ ही हुआ है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार–'' उपन्यास वस्तुतः नवल अर्थात् नया और ताजा साहित्यांग है, परंतु जिस मेधावी ने कथा, आख्यायिका आदि शब्दों को छोड़कर नॉवेल का प्रतिशब्द उपन्यास माना उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जा

---

[62] गुप्त गणपति चंद्र : 'साहित्यिक निबंध', लोक भारती प्रमाणित हिन्दी शब्दकोष पृष्ठ–417

सकता। जहाँ उसने इस नये शब्द के प्रयोग से यह सिद्ध किया कि वह साहित्यांग पुरानी कथाओं और आख्यायिकाओं से भिन्न जाति का है, वहाँ उसके शब्दार्थ के द्वारा यह भी सूचित किया है कि इस विशेष साहित्यांग के द्वारा साहित्यकार पाठक के निकट अपने मन की कोई विशेष बात, कोई अभिनव मत रखना चाहता है।''[63] साहित्य में उपन्यास का उद्‌भव संभवतः इसी विचारधारा के फलस्वरूप हुआ।

बौद्धिकता, तर्कसम्मत, घटनाक्रम, व्यक्ति एवं समाज का संघर्ष, सामान्य जीवन पर दृष्टि, व्यक्ति की महत्ता, अतीत के विरोध में वर्तमान पर बल, कल्पना के स्थान पर जीवन की यथार्थता का आग्रह, प्रकृति एवं समाज को पराभूत कर अग्रसर होने की आकांक्षा, जन्मगत अधिकारों के स्थान पर वर्गगत उपलब्धियों द्वारा समाज में प्रतिष्ठित होने का दावा–ये सभी प्रवृत्तियाँ मूलतः उस मध्यवर्ग की है जो सामंतवाद के गर्भ से फूटने के लिए छटपटाता है और अंततः जो पूँजीवाद में अपना विकास पाता है।''[64] अतः मध्यवर्ग अपने मूल्यों को स्थापित करने तथा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उपन्यास का विकास करता है। उपन्यास साहित्य के जन्म के पीछे मध्यवर्गीय चेतना और चिंतन मुख्य आधार रहा है। भारत में औपनिवेशिक शासन के बाद उन्नीसवीं शती के अंतिम चरण में इस प्रकार की परिस्थितियाँ निर्मित हुईं । आधुनिक युग में अंग्रेजी साहित्य के संपर्क से भारतीय साहित्य में उपन्यासों का विकास हुआ। जिन भाषा–भाषियों का अंग्रेजी से अधिक संपर्क था उसमें पुनर्जागरण भी पहले प्रारंभ हो गया था तथा शिक्षित मध्यवर्ग का उदय भी पहले हो गया। यही नहीं उपन्यासों का प्रचार–प्रसार भी पहले

---

[63] द्विवेदी हजारी प्रसाद : 'साहित्य संदेश (उपन्यरास अंक)', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–42

[64] श्रीवास्तव बीना : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', लोक भारती प्रमाणित हिन्दी शब्दकोष पृष्ठ–16

ही हो गया था। यही कारण है कि बंगला में कथा–साहित्य का विकास अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा पहले हुआ। यही नहीं भौतिक आधारों का विकास तथा आधुनिकता के सामाजिक आधार का भी विकास दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा पहले हुआ था। ''हिंदी में 'नॉवल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का पहला प्रयोग 1875 ई. में हुआ जबकि बंगला में 'नॉवल' के अर्थ में 'उपन्यास' शब्द का पहला प्रयोग भूदेव मुखोपाध्याय ने 1862 ई. में किया था।''[65] बंगाल के अनेक उपन्यासकारों– शरत्चंद्र, बंकिम चंद्र, रवींद्र आदि का गहरा प्रभाव हिंदी उपन्यास साहित्य पर पड़ा है।

भारत में उन्नीसवीं शताब्दी से धीरे–धीरे औद्योगिकरण के साथ–साथ अंग्रेजी शिक्षा नीति की शुरूआत होती है। इसी बीच मध्यवर्ग का जन्म नयी जीवन शैली, महत्त्वकांक्षाएँ, विचार–चिंतन, व्यवहार तथा कार्य के साथ होता है। अतः उपन्यास विधा के जन्म के साथ मध्यवर्ग का आविर्भाव भी जुड़ जाता है।

''हिंदी उपन्यास अनूदित, मौलिक और ऐतिहासिक पगडंडियों से होता हुआ समाज का बहुत बड़ा भाग समझे जाने वाले मध्यवर्गीय जीवन चेतना के चौराहे पर पहुँचा।''[66] उपन्यास कला के जन्म के मूल में यथार्थवाद काम कर रहा था। यही यथार्थवाद विकसित होता हुआ राष्ट्रीय जागरण का अभिन्न अंग बना और तभी से भारतीय कथा–साहित्य का स्वतंत्र रूप भी, रचना के केंद्र में भारतीय किसान के आने से विकसित हुआ। हिंदी साहित्य में उपन्यास मध्यवर्गीय चेतना से उद्भूत् होकर विभिन्न धाराओं में बँट जाता है। उपन्यास गतिशील रहते हुए सभी तत्वों को समेट लेने की क्षमता रखता है। इसलिए उपन्यास के विकास की एक विशेष परंपरा देखने

---

[65] राय गोपाल : 'हिंदी उपन्यास का इतिहास', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–13

[66] चौहाण अर्जुन : 'राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन–दृष्टि', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–192

को मिलती है। हिंदी कथा साहित्य में मध्यवर्ग के कई चरण देखे गए हैं। औपनिवेशिक कथा–साहित्य में मध्यवर्ग का जो रूप था, वह उत्तर औपनिवेशिक काल में नहीं था। उत्तर औपनिवेशिक काल में मध्यवर्ग का विकास एक 'आर्थिक श्रेणी' के तौर पर देखने को मिलता है वहीं आधुनिक कथा–साहित्य में वह अधिक जटिल और संश्लिष्ट रूप में चित्रित होता है। मध्यवर्ग का जीवन बनावटीपन, खोखलापन, मोह, भ्रम और तनाव से भरा हुआ है। इनके जीवन की जटिलताओं, उलझनों, अंतर्विरोधों आदि को चित्रित करना अत्यंत कठिन है। वर्तमान समय में मध्यवर्ग का अत्यधिक विस्तार हो रहा है और साथ ही मध्यवर्ग के चरित्र में लगातार परिवर्तन देखा जा रहा है। अतः मध्यवर्ग के चरित्र व बदलते परिवेश पर पुनः सूक्ष्मता व गंभीरता से विचार–विमर्श आवश्यक है।

हिंदी उपन्यासकारों ने सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक आदि सभी उपन्यासों में अन्य वर्गों की तुलना में मध्यवर्ग को यथार्थता से चित्रित किया है। इसका प्रमुख कारण इन उपन्यासकारों का संबंध मध्यवर्गीय परिवार से रहा है। राजेंद्र यादव ने तो ''प्रेमचंद को मध्यवर्ग का सबसे बड़ा चितेरा कहा है।''[67]

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास

सन् 1877 से 1918 ई. तक के समय को प्रेमचंद–पूर्व हिंदी उपन्यास या आरंभिक काल माना जा सकता है। इस युग में तिलिस्मी–ऐयारी उपन्यासों के अतिरिक्त सामाजिक, ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे गए जो उपदेशात्मक, आदर्शात्मक व मनोरंजन प्रधान है। किशोरीलाल गोस्वामी ने सामाजिक और ऐतिहासिक उपन्यास लिखकर हिंदी उपन्यास को समृद्ध बनाया, तो गोपालराम गहमरी ने जासूसी उपन्यास

---

[67] चौहाण अर्जुन : 'राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन–दृष्टि', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–260

लिखकर ख्याति अर्जित की तथा देवकीनंदन खत्री ने घटना प्रधान तिलिस्मी–ऐयारी उपन्यासों का विकास किया। इस दृष्टि से इस युग के प्रतिनिधि उपन्यासकारों के रूप में देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी तथा किशोरीलाल गोस्वामी इन तीनों के नाम लिए जा सकते हैं। प्रेमचंद पूर्व युग परतंत्रता की घोर यातना, शोषण का घोर अंधकार आदि समस्याओं से भारतवासियों का जीवन घोर संकट में था। वे इन समस्याओं से कुंठित हो चुके थे। शिक्षा का अभाव होने से शिक्षित पाठकों की कमी तथा शिक्षा क्षेत्र उन्नत भी नहीं थे। परंतु उपन्यासकारों का एक बड़ा वर्ग उन्हें जगाने के बजाए उनके मनोरंजन में ही लग गया।''[68]

अतः इस युग में जासूसी, रोमांटिक और तिलिस्मी–ऐयारी उपन्यास अधिकतर लिखे जाने लगे। ''इन उपन्यासों का लक्ष्य केवल घटना–वैचित्र्य रहा जिनमें जीवन के विविध पक्षों के चित्रण का कोई प्रयत्न नहीं।''[69] इस युग के उपन्यासकार यथार्थवाद, सामाजिक, ऐतिहासिक आदि उपन्यासों की रक्षा करते हुए तेजी से उभरते मध्यवर्ग का समाज के केंद्र में आने को अनदेखा नहीं कर पाये। साथ ही इस युग के उपन्यासकारों का संबंध प्रायः मध्यवर्गीय परिवार से भी था जिससे वे मध्यवर्गीय चेतना से भी ओतप्रोत भी थे। इसके अतिरिक्त हिंदी उपन्यासों के आरंभ के साथ ही पाश्चात्य शिक्षा व संस्कृति के प्रभाव से मध्यवर्ग के जीवन शैली में भी परिवर्तन के साथ–साथ विस्तार होने लगा था। जिससे मध्यवर्ग के कुछ लोग स्वधर्मानुरागी, तो कुछ पाश्चात्य संस्कृति के रंग में पूरी तरह सन गए। श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरू' तथा श्रद्धाराम फुल्लौरी की रचना 'भाग्यवती' आदि हिंदी के प्रारंभिक उपन्यास इस दृष्टि से

---

[68] तिवारी रामचंद्र : 'हिंदी का गद्य साहित्य', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–137

[69] तिवारी रामचंद्र : 'हिंदी का गद्य साहित्य', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–340

उल्लेखनीय हैं। ''परीक्षा गुरु' ऊपरी चकाचौंध से भ्रमित है।''[70] कथा का मूल पात्र मदन सभ्यता से प्रभावित एक मध्यवर्गीय व्यापारी है जो अपने मित्रों के कुचक्र में फँसकर विरासत में प्राप्त धन–संपत्ति खो देता है और ऋण न चुका पाने के कारण जेल की यात्रा करता है। इस विपत्ति में उसका मित्र बृजकिशोर उसकी सहायता कर उसे विपत्ति से मुक्ति दिलाता है। '''भाग्यवती' में चित्रित मध्यवर्ग, परंपरा की रूढ़िग्रस्त मान्यताओं, सड़े–गले रीति–रिवाजों एवं अंधविश्वास का शिकार है। इसमें नारी अपने पारिवारिक कर्तव्य द्वारा पारिवारिक जीवन को आनंदमयी बनाती है। यह नारी मध्यवर्गीय है।''[71]

किशोरीलाल गोस्वामी के अधिकतर उपन्यासों की मुख्य पात्र मध्यवर्गीय नारी है। इसी मध्यवर्गीय मुख्य पात्र के माध्यम से वे अपने उपन्यासों में सामाजिक रूढ़ियों, विषमताओं, धार्मिक आडंबरों, आर्थिक समस्याओं आदि को चित्रित करते हैं। इस दृष्टि से 'अंगूठी का नगीना', 'प्रणयिनी परिणय', 'लीलावती', 'तरुण तपस्विनी', 'पुनर्जन्म', व 'सौतिया डाह' आदि दृष्टव्य है। परंतु ''उन्होंने मध्यवर्गीय चेतना के विस्तार में कोई विशेष योगदान नहीं दिया है।''[72]

भारतेंदु युग में भारतीय समाज अंग्रेजों की भेद–नीति, शोषण–नीति, धन–लोलुपता, अंग्रेजी शिक्षा प्रचार, राष्ट्रीय भावनाओं का दमनचक्र, सांप्रदायिक भेद, ईसाई

---

[70] श्रीनिवास दास : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–258

[71] श्रीवास्तव बीना : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–258

[72] सिंह भूपेंद्र भूप : 'मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–54

मत का प्रचार तथा भारतीय उद्योगों का समाप्त होना आदि विषम परिस्थितियों से देश की दशा शोचनीय थी। ऐसे में इन विषम परिस्थितियों को दूर करने, अंधविश्वास–मिथ्याचार को नष्ट करने, भारतीय संस्कृति की स्थापना करने आदि के लिए विभिन्न सुधारवादी संस्थाएँ– ब्रहम समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन आदि का प्रादुर्भाव हुआ। इसी सुधारवादी संस्थाओं के फलस्वरूप सामाजिक उपन्यासों की रचना भी होने लगी थी। इन उपन्यासों का मूल उद्देश्य समाज का उत्थान करना व जनता को जागृत करना था। इस युग के उपन्यासकारों ने देश की दशा सुधारवादी दृष्टि से मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को अपने उपन्यासों में स्थान दिया। इस युग के ''उपन्यासों में शिक्षाप्रद सूक्तियाँ स्थान–स्थान पर मिलती हैं। सुधारवादी आंदोलनों के परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति की उच्चता और विदेशी संस्कृति की अनुपयुक्तता सिद्ध करने की प्रवृत्ति भी मिलती है।''[73] श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत ''भाग्यवती', श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु', लज्जाराम शर्मा की 'बिगड़े का सुधार','धूर्त रसिकलाल', 'ठेठ हिंदी का ठाठ','आदर्श हिंदू', 'अधखिला फूल, ब्रजनंदन साहस कृत 'सौंदर्योपासक', 'अरण्यबाला','राजेंद्र मालती', बालकृष्ण भट्ट की 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान' आदि दृष्टव्य हैं। बालकृष्ण भट्ट के इन उपन्यासों में यथार्थता के साथ–साथ वर्ग की विशेषता भी है। नूतन ब्रह्मचारी में एक विद्यार्थी नैतिकता के आधार पर एक डाकू को अच्छे आदमी के रूप में परिवर्तित कर देता है। सौ अजान एक सुजान में एक सहृदय सुजान व्यक्ति के सहयोग से एक भ्रष्ट परिवार की रक्षा को दर्शाया गया है। दोनों ही उपन्यासों में नैतिकता की प्रधानता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस युग में मध्यवर्ग का चित्रण व्यापक

---

[73] सिंह कुंवरपाल : 'हिंदी उपन्यास–सामाजिक चेतना', साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, प्रथम संस्करण पृष्ठ–24

संदर्भ में भले ही न हो' परंतु इस युग के उपन्यासकारों ने मध्यवर्गीय चित्रण के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार की है जिसका विकास परवर्ती प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों में स्पष्ट देखा जा सकता है। इस दृष्टि से इस युग की मध्यवर्गीय चित्रण की भूमिका प्रसंशनीय है।

2. प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास :

सन् 1918 से 1936 ई. तक के युग के समय को प्रेमचंद युग कहा गया है। हिंदी साहित्य के इतिहास में यह युग विशिष्ट स्थान रखता है' क्योंकि हिंदी उपन्यास को जासूसी, तिलिस्मी–ऐयारी, आदर्शवाद, रोमांटिक, मनोरंजन के कल्पनालोक से आदर्शोन्मुख यथार्थवाद तक और फिर यथार्थ के धरातल पर प्रतिष्ठित किया। ''यह युग नैतिकता, आदर्श और समझौतावाद को लेकर शुरु हुआ था, किंतु धीरे–धीरे इसमें यथार्थ का आग्रह बढ़ता गया और अंत में आदर्श की धुँधली रेखाओं के चिह्न ही शेष रह गये।''[74] इस समय भारतीय जनता समाज में हुए विभिन्न परिवर्तनों से भयभीत, राजनैतिक संघर्षों से आक्रांत थी। दूसरी तरफ देश आर्थिक संकट से गुजर रहा था। ऐसी विषम परिस्थितियों में मध्यवर्ग देश की समस्त जनता के साथ वैयक्तिक तथा सामाजिक विपत्तियों में आक्रांत होते हुए विकसित हो रहा था। इस समय ''भारतीय समाज में मध्यवर्ग ही प्रमुख था, अतः मध्यवर्ग ही कथाकारों का प्रधान उपजीव्य रहा। इसके नानावर्णी और विविध आयामी रूप ने कथाकारों को आकर्षित किया।''[75]

''प्रेमचंद के पदार्पण के पूर्व तक हिंदी उपन्यास किसी अविकसित कलिका की

---

[74] सिंह कुंवरपाल : 'हिंदी उपन्यास–सामाजिक चेतना', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–27

[75] मिश्र रामदरश : 'हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 43

भाँति मौन, निस्पंद एवं चेतनाहीन–सा ही रहा था। दिवाकर की प्रथम रश्मियों की भाँति प्रेमचंद की पावन कला पुनीत स्पर्श पाकर मानो जाग उठा, खिल उठा और मुस्कुराने लगा। राजा–रानियों और सेठ–सेठानियों के महलों की चारदीवारी में बंद रहने वाला कथानक जनसाधारण की लोकभूमि में उन्मुक्त रूप से विचरण करने लगा। लौह–मूर्तियो की भाँति स्थिर रहने वाले कठपुतलियों की भाँति लेखकों के मौन–संकेतों पर अस्वाभाविक गति से दौड़ने–फुदकने वाले पात्र मांसल, सजीव दिखाई पड़ने लगे।''[76]

''अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार–विचार, भाषा–भाव, रहन–सहन, आशा–आकांक्षा, दुख–सुख और सूझ–बूझ जानना चाहते हैं, तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता .....और उससे अधिक सच्चाई से दिखा सकने वाले परिदर्शक को अभी हिंदी–उर्दू की दुनिया नहीं जानती।''[77] उन्होंने मनोरंजन के स्थान पर जीवन की समस्याओं को अपने उपन्यासों का लक्ष्य बनाते हुए पहली बार जन–सामान्य को वाणी प्रदान की। उनके उपन्यासों में भारत के किसान और मध्यवर्गीय जीवन की विविध समस्याएँ अपनी विराटता में कलात्मक रूप में चित्रित हुई हैं।

प्रेमचंद ने राजनैतिक और सामाजिक दो प्रकार के उपन्यासों की रचना की है। उनके प्रारंभिक उपन्यास 'सेवा सदन' और 'वरदान' में शहरी मध्यवर्गीय जीवन के चित्रण के साथ–साथ वेश्याओं की समस्याओं का भी चित्रण हुआ है। उनके बाद के

---

[76] गुप्त गणपति चंद्र : 'साहित्यिक निबंध', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–419

[77] द्विवेदी हजारी प्रसाद : 'हिंदी साहित्य– उद्‌भव और विकास', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–250

उपन्यासों में ग्रामीण मध्यवर्ग का चित्रण है। कहीं आदर्शवादी, सुधारवादी, प्रगतिवादी रूप में देश और समाज के निर्माण में प्रमुख सहयोग करते हुए मध्यवर्ग की भूमिका चित्रित करते हैं, तो कहीं शोषक, रूढ़िवादी, स्वार्थपूर्ण, आडंबर युक्त, भ्रष्ट, प्रदर्शनप्रिय चरित्र को सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है। इस दृष्टि से प्रेमचंद का 'गबन' उपन्यास दृष्टव्य है जिसमें मध्यवर्ग की आर्थिक विषमता से उत्पन्न आभूषणों की लालसा के दुष्परिणामों व मध्यवर्ग के प्रदर्शनप्रिय चरित्र को यथार्थता के साथ चित्रित किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रेमचंद ने ही साहित्य में पहली बार मध्यवर्ग की समस्याओं, चरित्रों का विस्तारपूर्ण अंकन किया है।

प्रेमचंद के अतिरिक्त इस युग में मध्यवर्ग को स्थान देने वाले उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', विश्वम्भरनाथ शर्मा, 'कौशिक', वृंदावनलाल वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' उपेंद्रनाथ अश्क, जैनेंद्र, इलाचंद जोशी आदि उल्लेखनीय हैं। उग्र ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की दुर्बलताओं, अनीतियों तथा मध्यवर्गीय जीवन शैली की क्षय ग्रस्त प्रवृत्तियों को उद्‌घाटित किया है। 'दिल्ली का दलाल', 'कढ़ी में उबाल' ,'चंद हसिनों का खतूत' आदि इस दृष्टि से दृष्टव्य हैं।

उपेंद्रनाथ अश्क ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की बाह्य और आंतरिक स्थितियों का, सामाजिक रूढ़ियों के कारण आधुनिक युवक–युवतियों के विवाह संबंधित समस्याओं, प्रणय की असफलताओं, मध्यवर्गीय पात्रों के मनोभावों, विचारों, काम, अहम्, स्वार्थ, जिजीविषा आदि भावनाओं को बारीकी से रेखांकित किया है। इस दृष्टि से 'गिरती दीवारें', 'गर्म राख', 'चेतन' और 'बड़ी–बड़ी आँखें' उल्लेखनीय है। वृंदावनलाल वर्मा ने भी प्रेम विवाह, दाम्पत्य जीवन, दहेज प्रथा, मध्यवर्गीय नारी की आभूषण प्रियता व नारी की विविध समस्याओं को 'अचल मेरा कोई नहीं', 'सोना', 'अमरबेल', 'कुंडली चक्र' और 'लगन' आदि उपन्यासों में चित्रित किया है। कौशिक ने

अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी की सामाजिक स्थिति व उनके विभिन्न रूपों पर पकाश डाला है। 'संघर्ष', 'भिखारिणी', 'माँ' इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त इस युग के उपन्यासों में पति–पत्नी के पारस्परिक संबंधों व मध्यवर्गीय समाज में व्याप्त यौन–प्रवृत्तियों व कुंठाओं का भी मनोविश्लेषणात्मक सूक्ष्म चित्रण किया गया है। इस दृष्टि से अज्ञेय कृत 'शेखर : एक जीवनी', 'नदी के द्वीप', और जैंनेद्र कृत 'सुनीता', 'सुखदा', 'त्यागपत्र' आदि महत्त्वपूर्ण हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' कृत 'अलका', 'निरूपमा', 'कुल्लीभाट' आदि में मध्यवर्गीय समाज की चेतना, अछूतों का उद्धार, किसानों द्वारा शोषकों के प्रति किए गये विद्रोह और अंग्रेजों के प्रति आक्रोश आदि का चित्रण है। ये उपन्यास जन–जीवन को जागृत करने की दृष्टि से सराहनीय है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रेमचंदयुगीन उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज को आधार बनाकर सुधारवादी और आदर्शवादी दृष्टिकोण को अपनाया है। इस युग के इन उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज की व्यापक पृष्ठभूमि, व्यापक आधार के साथ–साथ समाज की सीमाएँ व विकृतियाँ भी वास्तविकता के साथ चित्रित है। फिर भी इन उपन्यासों में मध्यवर्ग अपने नैतिक मूल्यों को स्थापित करने, आदर्शवादी तथा यथार्थवादी प्रवृत्तियों को स्थापित करने में सक्षम हुआ है।

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास :

प्रेमचंदोत्तर काल में उपन्यास की नयी–नयी प्रवृत्तियाँ–मनोवैज्ञानिक, प्रतीकवाद, यथार्थवाद, अवचेतन वाद आदि के समावेश हो जाने से उपन्यास–लेखन क्षेत्र में काफी उन्नति हुई जिससे इस युग का उपन्यास साहित्य प्रेमचंदयुगीन उपन्यास साहित्य की अपेक्षा अधिक विकसित और उच्च भी है।''प्रेमचंद के बाद विश्व में और भारत में

बड़े–बड़े परिवर्तन हुए। इस समय के हिंदी उपन्यासों को देश के बहुस्तरीय आमूल परिवर्तनों ने, उपन्यास भारतीय मध्यवर्गीय समाज के जीवन के विविध भाव स्तरों तथा वैचारिक धरातलों को समाहित किए हुए हैं।''[78]

उपन्यास की नयी–नयी विभिन्न प्रवृत्तियाँ प्रेमचंद युग में ही पनपने लगी थीं जो इस युग में काफी विकसित हुई जिसे विभिन्न नामों से अभिहित किया जाने लगा। प्रेमचंदोत्तर कालीन उपन्यासकारों के उपन्यासों को किसी एक निश्चित प्रवृत्ति के अंतर्गत रखना अत्यंत कठिन कार्य है। अतः अध्ययन की सुविधा की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए तथा इस युग के उपन्यास के विकास परंपरा को भली–भाँति समझने के लिए इस युग को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है– सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक, यथार्थवादी और प्रयोगवादी। इस युग के अधिकांश उपन्यासकारों पर मार्क्स और फ्रायड का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है जिससे उपन्यासकार मध्यवर्गीय समाज के साथ–साथ मध्यवर्गीय व्यक्ति के प्रवृत्ति को भी उभारने लगे।

इस काल में सामाजिक जीवन की वास्तविकता व यथार्थ का चित्रण होते हुए भी सामाजिक जीवन के संदर्भ में रखकर उपन्यासों की रचना की जाने लगी अर्थात् सामाजिक जीवन के यथार्थ का चित्रण केंद्र में होते हुए भी व्यक्ति को प्रधान माना गया। व्यक्ति को केंद्र मानकर उपन्यासों की रचना करने वाले उपन्यासकारों में निर्मल वर्मा, मोहन राकेश, श्रीकांत वर्मा, महेंद्र भल्ला आदि प्रमुख है। निर्मल वर्मा ने 'वे दिन','लाल टीन की छत','एक चिथड़ा सुख' आदि उपन्यासों में पारिवारिक जीवन की निष्फलता एवं मध्यवर्गीय व्यक्ति की विवशता का चित्रण किया गया है। महेंद्र भल्ला

---

[78] पद्मजा पी. के. : 'हिंदी उपन्यास साहित्य पर वैचारिक आंदोलन का प्रभाव', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–196

का 'पति के नोट्स' और श्रीकांत वर्मा का 'दूसरी बार' में मध्यवर्ग के व्यक्ति में अतृप्त काम भावनाओं व यौनाचार का चित्रण है। व्यक्ति को केंद्र बनाकर लिखने वाले वर्ग के उपन्यासों में मध्यवर्गीय व्यक्ति के अहं, कुंठाओं, आकांक्षाओं, वासनाओं तथा इससे संबंधित मानसिकताओं व परिस्थितियों का खुलकर चित्रण हुआ है।

समाज को केंद्र बनाकर लिखने वालों में दो वर्ग देखा जाता है–सामाजिक और समाजवादी। सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन का चित्रण रहता है, किंतु उसे देखने की लेखक की कोई संस्थागत निर्दिष्ट दृष्टि नहीं रहती।''[79] इस प्रकार के उपन्यासों में अमृतलाल नागर की 'बूँद और समुद्र','अमृत और विष', 'महाकाल', उपेंद्रनाथ अश्क कृत 'एक नन्ही कंदील', 'गिरती दीवारें', 'बड़ी–बड़ी आँखें', 'शहर में घूमता आईना' और भगवतीचरण वर्मा कृत 'भूले–बिसरे चित्र', 'टेड़े–मेड़े रास्ते', 'पतन', तीन वर्ष', 'आखिरी दाँव' आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में ''लेखक के अपने विचारों के वाहक बनकर स्वतः अपने ही वर्ग की कमजोरियों की व्याख्या करते हुए मोहाच्छन्न, दुर्बल पात्रों के मन में भी नई चेतना की किरणें विकीर्ण करते हैं।''[80] इन उपन्यासों में सामाजिक विकृतियाँ, धार्मिक आडंबर, शोषण, आर्थिक संकट, राजनैतिक असंतोष, विषमता से पीड़ित तथा वर्गगत विषमता आदि सामाजिक समस्याओं के अतिरिक्त निम्न मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के पात्रों के क्षोभ का भी अंकन किया गया है। इन उपन्यासकारों ने किसी वाद विशेष के बंधनों में न पड़कर शहरी मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को उड़ेल कर रख दिया है। ''किंतु समाजवादी उपन्यासकारों की एक निर्दिष्ट दृष्टि होती

---

[79] मिश्र रामदरश : 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 129

[80] रामदरश मिश्र : 'हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 79

है। वह दृष्टि लेखक की अपनी निजी दृष्टि नहीं हो सकती, यह मार्क्सवादी होती है।''[81]

साहित्य में गांधीवादी दर्शन एवं उसकी मान्यताओं की अंतर्विरोधों तथा असंगत प्रवृतियों के व्यामोह से मध्यवर्गीय चेतना के टूटने का दूसरा नाम है समाजवादी यथार्थवाद।''[82] इस प्रकार के उपन्यासों में अमृत राय के 'बीज','नागफनी का देश', राजेंद्र यादव के 'उखड़े हुए लोग', 'प्रेत बोलते हैं', जगदंबा प्रसाद का 'मुर्दाघर', यशपाल का 'झूठा–सच', 'पार्टी कॉमरेड', 'दादा कॉमरेड', बारह घंटे, देशद्रोही, मनुष्य के रूप, भैरवप्रसाद गुप्त की कृति 'गंगा मैया', 'सीता मैया', भीष्म साहनी कृत 'बसंती', 'झरोखे', 'कड़ियाँ', रांगेय राघव कृत 'विषाद मठ', 'जी हुजूर' और 'घरौदा' आदि उल्लेखनीय हैं। इन उपन्यासों में समाज की सड़ी–गली पुरानी परंपराओं, ठगने वालों, शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश ही नहीं बल्कि उसका विद्रोह भी है। साथ ही शोषितों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए उन्हें जागृत करने और स्थापित करने का कार्य भी किया गया है। इस प्रकार इन उपन्यासकारों ने मनुष्य की सामाजिक परिस्थितियों को महत्त्व देकर उनके आर्थिक पक्षों को भी उजागर किया है। इसके छोटे कस्बों और नगरों में रहने वाले निम्न मध्यवर्ग का ही नहीं' बल्कि उच्च मध्यवर्ग के लोगों के जीवन की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का चित्रण भी मार्मिक ढंग से किया गया है। ''इसी सामाजिक परंपरा को नए परिवेश में आगे बढ़ाने वाले उपन्यास हैं आंचलिक

---

[81] मिश्र रामदरश : 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 129

[82] श्रीवास्तव बीना : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–262

उपन्यास।''[83] आज इस प्रकार के उपन्यासों को विशेष महत्व दिया जा रहा है। आंचलिक उपन्यासों में किसी विशेष प्रदेश की संस्कृति को सजीव वातावरण में विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। इसके लिए आंचलिक उपन्यासकार को अंचल विशेष में जाकर वहाँ की संस्कृति, लोगों के बीच रहना, साक्षात्कार करना आवश्यक होता हैं। अंचल विशेष के उपन्यासों में मध्य उच्चवर्ग और मध्य निम्नवर्ग की सामाजिक, आर्थिक समस्याएँ ही नहीं, नारी समस्याओं, युवकों के प्रगतिशील दृष्टिकोण, रहन–सहन, संस्कृति, रीतियाँ, धार्मिक पाखंडो, भ्रष्टाचार आदि जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण है। इस दृष्टि से फणीश्वरनाथ रेणु कृत मैला आँचल, परती परिकथा विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त शिवप्रसाद कृति 'अलग–अलग वैतरणी', नागार्जुन के 'नया पौधा', 'रतिनाथ की चाची', 'बाबा बटेसरनाथ', 'दुख मोचन', राही मासूम रजा का 'आधा गाँव', उदयशंकर भट्ट कृत 'सागर लहरें और मनुष्य', शिवप्रसाद मिश्र कृत 'बहती गंगा' भी उल्लेखनीय है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासों में उपन्यासकार अपने अनुभूति व कल्पना शक्ति से व्यक्ति के अंतःसंघर्ष, मानसिक संघर्ष, अवचेतन व अचेतन अवस्थाओं को सूक्ष्मता से परत–दर–परत पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। इस दिशा में पथ प्रदर्शक के रूप में फ्रायड, युंग, एडलर, एलिस हेवलाक तथा स्टेकेल आदि के सिद्धांत व मान्यताएँ महत्त्वपूर्ण रही है। वास्तव में मध्यवर्ग की रूढ़ी युक्त मान्यताएँ, प्राचीन परंपराओं से जकड़ा व्यक्ति का मुक्ति पाने के लिए छटपटाने, आडंबरपूर्ण व जबरदस्ती लादे गए नैतिक मूल्य आदि समस्याओं व मध्यवर्ग के जीर्ण–शीर्ण, शिथिल चारित्रिक प्रवृत्तियों को स्थान नहीं मिला। मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास ''मध्यवर्ग की इस अवरूद्ध, आत्मकेंद्रित

---

[83] मिश्र रामदरश : 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ– 133

व आत्मघाती चेतना की शिल्पविधा है।''[84] जिसमें उपन्यासकारों ने अपनी मनोवैज्ञानिक क्षमता से हीन भावनाओं, निराशाओं को मार्मिकता से अभिव्यक्त किया है। इन उपन्यासकारों में अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी, जैनेंद्र कुमार आदि प्रमुख स्थान पर हैं।

इलाचंद्र जोशी कृत 'संन्यासी','प्रेत की छाया','जहाज का पक्षी','पर्दे की रानी', 'निर्वासित' आदि उपन्यासों में फ्रायड के सिद्धांत का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है जिसमें व्यक्ति की दमित वासना, काम कुंठाओं व अर्धचेतन की कहानी कही गई है। इन उपन्यासों में मध्यवर्ग का चित्रण होकर भी वैयक्तिकता को अधिक महत्त्व दिया गया है। जैनेंद्र कुमार ने अपने उपन्यासों का विषय नगरों को बनाकर नागरिक जीवन की समस्याओं का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। साथ ही शिक्षित मध्यवर्गीय परिवारों में घटित होने वाली घटनाओं, उस घटनाओं का सामंजस्य न कर पाने की छटपटाहट, उससे उत्पन्न निराशा, कुन्ठा, व नारी पुरूष के प्रेम की समस्याओं और मानसिक द्वंद्वों को अपने उपन्यासों में स्थान दिया है। इस दृष्टि से जैनेंद्र कृत 'परख', 'सुनीता, 'त्यागपत्र', 'सुखदा', 'विवर्त','कल्याणी' आदि दृष्टव्य हैं।

अज्ञेय ने 'शेखर : एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' में मध्यवर्गीय पात्र विशेषतः नर नारी के परस्पर यौन–संबंध व पात्रों की मनःस्थितियों का अत्यंत जटिल और सूक्ष्म ढंग से चित्रण किया है, जो बुद्धि को कुरेदने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त मनोविश्लेषणात्मक उपन्यासकारों में डॉ. देवराज कृत 'अजय की डायरी', 'रोड़े और पत्थर', बाहर–भीतर', 'पथ की खोज' आदि में शिक्षित मध्यवर्ग की करुण कथा का मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण किया है। इस धारा के अन्य उपन्यासकारों में धर्मवीर भारती, प्रभाकर माचवे, रघुवंश, भरत भूषण अग्रवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, निर्मल वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

---

[84] श्रीवास्तव बीना : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–264

इस युग में कुछ ऐसे उपन्यासकारों का भी जन्म हुआ जो मध्यवर्गीय चेतना व विभिन्न तरह की भ्रांति से जकड़े हुए थे। फ्रायड की मनोविश्लेषणात्मक पद्धति भी इस समस्याओं का समाधान करने में सक्षम न थी और न ही मार्क्सवादी सिद्धांत। अतः ''मध्यवर्गीय चेतना अपने व्यक्ति अनुभवों के साक्ष्य पर विश्वास करती हुई नयी राहों का अन्वेषी बनी।''[85] जिसे प्रयोगशील उपन्यासकार के नाम से अभिहित किया गया। इस प्रकार के नवीन प्रयोग करने वाले वर्गो में मोहन राकेश कृत 'अंधेरे बंद कमरे', 'न आने वाला कल' डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल कृत 'बया का घोसला और साँप' धर्मवीर भारती कृत 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', डॉ. देवराज कृत 'अज्ञेय की डायरी' प्रभाकर माचवे कृत 'परंतु' आदि दृष्टव्य हैं। इन उपन्यासों में अनेक प्रकार की विसंगतियों का चित्रण है।

निष्कर्ष–

अमरकान्त वर्तमान के हिन्दी कथा–साहित्य के भारत वर्ष के गौरवान्वित साहित्यकारों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने आजादी के बाद वाले भारत के मध्य एवं निम्नमध्यवर्गीय समाज को होने वाली परेशानियों तथा समस्याओं का यथार्थ रूप से चित्रण अपने लेखन में किया है। यह निहित है कि भारत देश की बहुत आबादी मध्यवर्ग तथा निम्नमध्यवर्ग समाज से ही आती है। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों में आर्थिक तथा सामाजिक विषमताओं की ओर इशारा तो मिलता है लेकिन एक सूत्रता उसमें दर्शित होती नहीं दिखायी पड़ती है। उन्होंने भारतीय समाज में रह रहे मनुष्य के संघर्षों के साथ–साथ उनके कमीनेपन को भी दर्शाया है। यह उनके कथा–साहित्य की बड़ी उपलब्धि है।

---

[85] श्रीवास्तव बीना : 'हिंदी उपन्यास का विकास और मध्यवर्गीय चेतना', ज्ञानमण्डल प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण पृष्ठ–166